हरिभूमि

हिसार-हांसी भूमि

रोहतक, रविवार 26 अप्रैल 2026

12 सरकार गोवंश संरक्षण एवं संवर्धन के लिए प्रतिबद्ध...

12 पुरुषोत्तम एक्सप्रेस का हिसार तक विस्तार...

खबर संक्षेप

चोरी के सामान समेत दो आरोपित किए गिरफ्तार

हांसी। बस स्टैंड चौकी पुलिस ने चोरी के मामले में दो आरोपियों को काबू किया है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से चुराया गया सामान व चोरी की वारदात में प्रयुक्त मोटरसाइकिल बरामद की है। आरोपियों की पहचान माडल टाउन निवासी दीपक व कृष्णा कॉलोनी निवासी हरीश के रूप में हुई है। एएसआई अनिल कुमार ने बताया कि वेदप्रकाश ने 22 अप्रैल को शिकायत दी थी कि उसकी अमर मार्केट स्थित दुकान से पीतल की पाइप और टूटियां चोरी की शिकायत दी थी। शिकायत के आधार पर मामला दर्ज कर आरोपी दीपक व हरीश गिरफ्तार कर पूछताछ के दौरान आरोपियों के कब्जे से चोरी की पीतल की पाइपें व टोटियां तथा चोरी की वारदात में प्रयुक्त मोटरसाइकिल बरामद कर कब्जा पुलिस में लेकर दोनों अदालत में पेश किया जहां से उन्हें न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया।

चेक बाउंस मामले में आरोपित गिरफ्तार

हांसी। शहर थाना पुलिस ने चेक बाउंस मामले उद्घोषित एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान झज्जर जिले के गांव चपार जोगियां निवासी रितेश के रूप में हुई है। एएसआई मुकेश कुमार ने बताया कि आरोपी रितेश को कोर्ट द्वारा चेक बाउंस मामले में 28 अक्टूबर को उद्घोषित आरोपी घोषित किया गया था। इस संबंध में थाना शहर हांसी में आरोपी के खिलाफ संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज कर आरोपी को काबू कर अदालत में पेश कर जेल भेज दिया।

सट्टा खाईवाली में एक काबू, 35 हजार बरामद

हांसी। पुलिस की अपराध शाखा-वन ने सरेआम सट्टा खाईवाली करते एक आरोपी को काबू किया है। आरोपी की पहचान भाटिया कालोनी निवासी राजेश के रूप में हुई है। पुलिस ने पकड़े गए आरोपी के कब्जे से 35 हजार रुपये की नकदी बरामद की है। मुख्य सिपाही मनोज कुमार ने बताया कि गश्त व अपराध जांच के दौरान सूचना मिली कि भाटिया कॉलोनी स्थित राधिका फैक्ट्री रोड़ पर सरेआम सट्टा खाईवाली का अवैध धंधा कर रहा है। सूचना के आधार पर पुलिस टीम ने तत्परता से मौके पर दबिश देकर आरोपी को काबू कर तलाशी ली तो उसके कब्जे से सट्टा राशि के 35 हजार रुपए बरामद किए गए।

लिफ्ट देकर पर्स चोरी करने वाला गिरफ्तार

हिसार। 12 क्वार्टर चौकी पुलिस ने बाइक सवार से लिफ्ट मांगकर उसका पर्स चोरी करने वाले एक शातिर युवक को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से चोरी की गई नकदी बरामद करली है। आरोपी की पहचान हिसार में रह रहे राजपुरा कैरावाल निवासी रोबिन के रूप में हुई है। पुलिस के अनुसार इस संबंध में कैंपस विद्या देवी जिंदल स्कूल राहुल ने पुलिस को शिकायत दी थी।

हर माह ठगी के 40 से 50 लाख रुपये दुबई में आकाओं को करते थे ट्रांसफर

साइबर ठग गिरोह का भंडाफोड़, 5 आरोपी दबोचे, कई राज्यों में फैला है नेटवर्क

- *भारतीय नागरिक से धोखाधड़ी कर ठगा गया पैसा भेजते थे दुबई*
- *8 मोबाइल, 33 बैंक पास बुक, 22 एटीएम कार्ड व लैपटॉप बरामद*

पकड़े गए आरोपी 3-4 साल से साइबर ठगी का काम कर रहे थे। इन पर पहले भी साइबर ठगी के मामले हैं। पकड़े गए आरोपी 10वीं व 12वीं पास है। पूछताछ में सामने आया है कि गिरोह के सदस्य अपने साथ समय-समय पर नए सदस्यों को भी जोड़ते रहते हैं।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

साइबर क्राइम थाना ने साइबर ठगी गिरोह का भंडाफोड़ करते हुए 4 आरोपियों को लुधियाना जिले के ढंडारी कलां से गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान इन्द्रजीत सिंह निवासी सतजोग नगर, लुधियाना, हरेन्द्र शर्मा उर्फ हन्नी व मनीष श्रीगंगानगर तथा अदनान निवासी चारमीनार, हैदराबाद के रूप में हुई है। पुलिस ने चारों आरोपितों के पास से 18 मोबाइल फोन, 21 बैंक पासबुक, 12 चेक बुक, 22 एटीएम कार्ड तथा 1 लैपटॉप बरामद किया है। इनका उपयोग साइबर ठगी के लिए किया जा रहा था। बरामद उपकरणों को फॉरेंसिक जांच के लिए भेजा जाएगा। आरोपियों को अदालत में पेश कर 5 दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया है। गिरोह से जुड़े एक आरोपी को पहले ही गिरफ्तार किया जा चुका है, जिसे शुक्रवार को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया। पुलिस की शुरुआती पूछताछ में सामने आया है कि गिरोह के सदस्य भारतीय नागरिकों को ठगते थे। इस गिरोह के तार दुबई से जुड़े हुए है। एक अनुमान है कि यह गिरोह हर महीने ठगी की 40 से 50 लाख रुपये की रकम दुबई में अपने आकाओं के पास भेजते थे। आरोपियों का नेटवर्क देश के कई राज्यों में भी फैला हुआ है। आरोपितों के पास से बरामद बैंक खाते हरियाणा, पंजाब, हिमाचल के अलावा तमिलनाडु राज्यों के भी है।

हिसार। गिरफ्तार किए गए साइबर ठग गिरोह के बारे में जानकारी देते एएसपी मयंक मुदगिल।

दुबई एक्सचेंज नाम की चलाते हैं एप

एएसपी मयंक मुदगिल के अनुसार गिरोह के सदस्य दुबई एक्सचेंज के नाम से एक ऐप चलाते हैं और उससे लोगों को जोड़ते हैं। इसके बाद वे लोगों को निवेश तथा गैंबलिंग, सट्टे का काम करवाकर पैसे ठगी काम कराते हैं। जब साइबर थाना क्राइम टीम ने दबिश दी तो गिरोह के दो हैंडलर व मैनेजर मौके पर नहीं थे। वे दोनों ही दुबई के लोगों के संपर्क में है। वे ही क्लाइंट लेकर आते हैं।

क्रिकेट पर सट्टा भी लगवाता है गिरोह

बरामद इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को फॉरेंसिक जांच के लिए भेजा जाएगा प्रारंभिक जांच में यह भी सामने आया है कि आरोपी फर्जी बैंक खाते खुलवा कर अथवा खरीदकर उनमें ठगी की राशि जमा करवाते थे तथा बाद में विभिन्न माध्यमों से राशि निकाल लेते थे। बरामद इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को फॉरेंसिक जांच के लिए भेजा जाएगा व बैंक खातों के रिकॉर्ड का विश्लेषण करके आगामी कार्रवाई की जाएगी।

फर्जी खातों का नेटवर्क कई राज्यों तक फैला

जांच के दौरान पता चला कि ठगी की राशि विभिन्न खातों के माध्यम से मैसर्ज इंजमाम क्लॉथ हाउस के खाते में ट्रांसफर की गई। इस खाते के संचालक शाहरुख निवासी फरीदाबाद को पहले ही गिरफ्तार किया जा चुका है। आगे की जांच में सामने आया कि फर्जी बैंक खातों का नेटवर्क लुधियाना सहित कई राज्यों में फैला हुआ है। साइबर थाना के एएसआई अनिल के नेतृत्व में कार्रवाई करते हुए इन्द्रजीत सिंह, अदनान, मनीष तथा हरेन्द्र शर्मा उर्फ हन्नी को गिरफ्तार करके पुलिस रिमांड पर लिया गया है।

बरवाला के तरुण से की थी 29 लाख रुपये की ठगी

एएसपी मयंक मुदगिल ने बताया कि शिकायतकर्ता तरुण सिंगला निवासी बरवाला ने एनसीसीआरपी पोर्टल पर वर्ष 2025 में शिकायत दर्ज करवाई थी। शिकायत के अनुसार उसे इंस्टाग्राम के माध्यम से फर्जी निवेश योजना में फंसाया गया और व्हाट्सएप ग्रुप के जरिए शेयर ट्रेडिंग में निवेश करने के लिए प्रेरित किया गया। आरोपितों ने खुद को एक प्रतिष्ठित म्यूचुअल फंड कंपनी से जुड़ा बताकर फर्जी मोबाइल ऐप के माध्यम से विश्वास जीत लिया और विभिन्न बैंक खातों में किस्तों में लाखों रुपये जमा करवा लिए। प्रारंभिक जांच में सामने आया कि शिकायतकर्ता से लगभग 29 लाख रुपये की ठगी की गई। आरोपी ऐप में फर्जी बैलेंस दिखाकर अधिक निवेश करवाते रहे। जब पीड़ित ने पैसे निकालने की कोशिश की तो उससे भारी शुल्क मांगा गया, जिससे उसे धोखाधड़ी का पता चला। पुलिस पूछताछ में सामने आया है कि साइबर ठग अधिक लाभ का लालच देकर लोगों को अपने जाल में फंसाते थे। जैसे ही कोई व्यक्ति इनके जाल में फंसते तो उससे ठगी गई राशि को मिनटों में कई लेयर में ट्रांसफर कर देते थे। वे ठगी का पैसा इतने लेयर में ट्रांसफर कर देते हैं कि फिर उसे पकड़ना बड़ी मुश्किल हो जाता है।

बिना स्वीकृति अवकाश पर जाने पर होगी कार्रवाई : विक्रम सिंह

- छुट्टी लेने से पहले 15 दिन पूर्व आवेदन अनिवार्य
- डीएचबीवीएन प्रबंधन के निर्देश जारी, करना होगा पालन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

दक्षिण एवं उत्तर हरियाणा बिजली वितरण निगम के प्रबंध निदेशक विक्रम सिंह के निर्देशानुसार डीएचबीवीएन प्रबंधन ने निगम कर्मचारियों द्वारा बिना स्वीकृति अवकाश पर जाने की प्रवृत्ति पर सख्ती करते हुए नए निर्देश जारी किए हैं। अब सभी कर्मचारियों को अवकाश पर जाने से कम से कम 15 दिन पहले संबंधित कैडर कंट्रोलिंग अथॉरिटी को पूर्ण विवरण सहित आवेदन देना अनिवार्य होगा। जारी आदेशों के अनुसार दक्षिण हरियाणा बिजली वितरण निगम प्रबंधन के संज्ञान में आया है कि कई कर्मचारी अवकाश स्वीकृत होने से पहले ही छुट्टी पर चले जाते हैं तथा समय पर आवेदन भी प्रस्तुत नहीं करते, जिससे अन्य कर्मचारियों पर अतिरिक्त कार्यभार पड़ता है और दैनिक कार्य प्रभावित होता है। निगम प्रवक्ता संजय चुघ ने बताया कि जारी निर्देशों के अनुसार, भविष्य में यदि कोई कर्मचारी निर्धारित प्रक्रिया का पालन नहीं करता है तो उसके विरुद्ध निगम के प्रचलित नियमों के तहत अनुशासनात्मक कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। उन्होंने बताया कि प्रबंध निदेशक, विक्रम सिंह की स्वीकृति से सभी विभागाध्यक्षों एवं मुख्यालय के सभी संबंधित अधिकारियों, मुख्य अभियंताओं, अधीक्षण अभियंताओं तथा कार्यकारी अभियंताओं को इन निर्देशों का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित करने के निर्देश जारी कर दिए गए हैं।

पुलिस ने किया चोरी का खुलासा, आरोपी काबू

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

अग्रोहा पुलिस ने क्षेत्र में हुई चोरी की वारदातों को सुलझाते हुए एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपी की पहचान बीडीपीओ ब्लॉक अग्रोहा निवासी सतीश के रूप में हुई है। पुलिस ने उसके कब्जे से चोरी की राशि बरामद की है। अग्रोहा थाना प्रभारी प्रवेश कुमार ने बताया कि इस संबंध में अग्रोहा की स्वागत कॉलोनी निवासी संजय की शिकायत पर केस दर्ज किया गया था। संजय ने पुलिस को बताया कि वह करीब 20 दिन पहले अपने परिवार के साथ दिहाड़ी मजदूरी के लिए हांसी गया हुआ था। जब वह 8 अप्रैल को वापस लौटा तो पाया कि उसके घर का ताला टूटा हुआ था।

जनता के हित के लिए समाधान शिविर में विभागाध्यक्षों की उपस्थिति जरूरी : डीसी

रिभूमि न्यूज ▶▶ हांसी

उपायुक्त राहुल नरवाल ने कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा आमजन की समस्याओं के त्वरित समाधान के उद्देश्य से सप्ताह में दो दिन सोमवार और वीरवार को जिला स्तर पर समाधान शिविर आयोजित किए जाते हैं। ये शिविर जिला सचिवालय के ग्राउंड फ्लोर स्थित एसडीएम कोर्ट कक्ष में आयोजित होते हैं, जिनमें सभी विभागाध्यक्षों की उपस्थिति अनिवार्य निर्धारित की गई है। कहा कि कुछ विभागाध्यक्ष स्वयं उपस्थित न होकर अपने स्थान पर अन्य अधिकारी या कर्मचारियों को भेज देते हैं, जो कि नियमों के विरुद्ध है और इसे किसी भी सूरत में स्वीकार नहीं किया जाएगा। उसमाधान शिविर राज्य सरकार की एक महत्वपूर्ण और जनहितकारी पहल है, जिसका मुख्य उद्देश्य लोगों की शिकायतों का मौके पर ही समाधान सुनिश्चित करना है।

शिकायतों में पारदर्शिता लाएं

शिविर में कई बार गंभीर प्रकृति की शिकायतें सामने आती हैं, जिनके समाधान के लिए तत्काल प्रशासनिक निर्णय आवश्यक होता है। ऐसे में विभागाध्यक्ष की अनुपस्थिति न केवल प्रक्रिया को प्रभावित करती है, बल्कि दूर-दराज से अपनी समस्याएं लेकर आए नागरिकों को भी असुविधा का सामना करना पड़ता है। इससे शिकायतों के समग्र और प्रभावी निपटान की गति भी बाधित होती है।

-राहुल नरवाल, डीसी, हांसी।

शराब तस्करों पर शिकंजा,पीरांवाली के जंगलों में चेकिंग

- डॉग स्कवायड और स्वेट टीम के साथ चलाया सर्च अभियान, 2200 लीटर लाहन बरामद

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

अवैध शराब के निर्माण और तस्करी के खिलाफ चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत सदर थाना पुलिस ने पीरांवाली गांव के सुनसान और झाड़ियों वाले इलाके में बड़ी छापेमारी की। इस कार्रवाई की मुख्य विशेषता पुलिस के विभिन्न विंगों का समन्वय रहा, जिसमें डॉग स्क्वाड और स्वेट कमांडो टीम ने भी सक्रिय रूप से हिस्सा लिया। पुलिस को सूचना मिली थी कि पीरांवाली गांव के बाहरी इलाके में झाड़ियों की आड़ में अवैध रूप से कच्ची शराब (लाहन) तैयार की जा रही है। सूचना की गंभीरता को देखते हुए एसआई विनोद कुमार के नेतृत्व में एक संयुक्त टीम का गठन किया गया । इलाके की भौगोलिक स्थिति चुनौतीपूर्ण होने के कारण डॉग स्कवायड की मदद ली गई, जिसने सटीक स्थान की पहचान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, वहीं स्वेट टीम ने सुरक्षा घेरा बनाकर ऑपरेशन को अंजाम दिया।

हिसार। पीरांवाली गांव में अभियान चलाते पुलिस बल। फोटो : हरिभूमि

भारी मात्रा में लाहन बरामद, किया नष्ट

सर्च अभियान के दौरान पुलिस टीम ने झाड़ियों में छुपाकर रखे गए पांच ड्रम बरामद किए। इन ड्रमों में लगभग 1000 लीटर लाहन (कच्ची शराब) भरी हुई थी, जिसे अवैध रूप से निकाला जाना था। पुलिस टीम ने मौके पर ही बरामद की गई 1000 लीटर लाहन व शराब बनाने के उपकरणों को भी कब्जे में ले लेकर अज्ञात के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

एनसीसी आर्मी विंग के लिए चयन प्रकिया संपन्न

हिसार। राजकीय आदर्श संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नलवा में जूनियर विंग के कैडेटस का चयन प्रकिया का आयोजन किया गया। इसके लिए थर्ड हरियाणा गर्ल्स बटालियन से हवलदार रविशंकर तथा हवलदार संदीप ने विद्यालय का दौरा किया। इस प्रकिया में 26 रिक्तियों के लिए 32 बालिकाओं ने प्रतिभागिता की। चयन प्रक्रिया के दौरान प्रतिभागियों की शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक क्षमता के साथ सर्वांगीण विकास का आंकलन किया गया ताकि एनसीसी के माध्यम से इन्हें एक मजबूत व्यक्तित्व जो भविष्य में आने वाली सभी चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार किया जा सकें। इस प्रक्रिया का संचालन नलवा की गर्ल्स एनसीसी एएनओ पूनम रानी की उपस्थिति और सहयोग से किया गया।

सीआईए बरवाला ने 754 ग्राम अफीम के साथ दो नशा तस्कर किए गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

सीआई बरवाला प्रभारी प्रदीप कुमार के नेतृत्व में नशा तस्करों के खिलाफ चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत टीम ने दो नशा तस्करों को अफीम सहित गिरफ्तार किया है। आरोपियों से 754 ग्राम अफीम बरामद हुई है। पुलिस प्रवक्ता के अनुसार सीआईए बरवाला के प्रभारी प्रदीप कुमार के नेतृत्व में टीम गश्त पर थी। इसी दौरान गुप्त सूचना के आधार पर न्यू क्लॉथ मार्केट, हिसार (फेज-1) के पास छापेमारी की गई। वहां नीम के पेड़ों के नीचे संदिग्ध अवस्था में खड़े दो युवकों को पुलिस टीम ने घेराबंदी कर काबू करके तलाशी ली तो आरोपियों के कब्जे से 754 ग्राम अफीम बरामद हुई। पकड़े गए आरोपियों की पहचान उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर जिले कटका गांव निवासी जतिन शुक्ला व शिवम के रूप में हुई है।

हिसार। अफीम सहित पकड़े गए दोनों आरोपी। फोटो : हरिभूमि

कैंसर के सफल इलाज के लिए जल्दी निदान करना बहुत जरूरी : डॉ. गौतम

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

मेदांता-द मेडिसिटी के किडनी एवं यूरोलॉजी इंस्टिट्यूट में यूरो-ऑन्कोलॉजी एवं रोबोटिक सर्जरी के चेयरमैन डॉ. गगन गौतम ने कहा कि भारत में हर साल लगभग 16,000-18,000 नए किडनी कैंसर के केस सामने आते हैं और हरियाणा में ही प्रति वर्ष लगभग 700 नए मामले दर्ज होते हैं। सफल इलाज के लिए जल्दी निदान करना बहुत जरूरी है। डॉ. गौतम, मेदांता और हिसार के सर्जन क्लब के द्वारा आयोजित एक पैनल चर्चा में अपने विचार रख रहे थे। कार्यक्रम में हिसार के सर्जन क्लब के अध्यक्ष डॉ. राजीव डबला, सचिव डॉ. दीपक मित्तल और हिसार तथा आसपास के क्षेत्रों के वरिष्ठ चिकित्साकर्मी भी उपस्थित थे। डॉ. गौतम ने बताया कि भारत में प्रचलित शीर्ष दस कैंसरों में किडनी का कैंसर या रीनल सेल कार्सिनोमा भी शामिल है। किडनी में मौजूद छोटी नलिकाओं में विकसित होते हैं और विकिरण चिकित्सा के खिलाफ अत्यंत प्रतिरोधी होते हैं। इसलिए, इस प्रकार के कैंसर का प्राथमिक उपचार सर्जरी होती है, जिसमें या तो रेडिकल नेफ्रेक्टोमी या पार्शियल नेफ्रेक्टोमी शामिल है।

एलपीजी बुकिंग के नाम पर साइबर ठगी का बढ़ रहा है जाल : एसपी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हांसी

पुलिस अधीक्षक विनोद कुमार ने एलपीजी गैस बुकिंग के नाम पर बढ़ रहे साइबर ठगी के मामलों को लेकर आमजन के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि साइबर अपराधी फास्ट बुकिंग, तुरंत डिलीवरी या विशेष छूट जैसे लालच देकर एसएमएस, व्हाट्सएप व सोशल मीडिया के माध्यम से फर्जी लिंक भेज रहे हैं। इन लिंक पर क्लिक करने पर यूजर नकली वेबसाइट पर पहुंच जाता है, जहां उससे एडवांस पेमेंट या बैंक से जुड़ी गोपनीय जानकारी मांगी जाती है। कई मामलों में ठग ओटीपी या युपीआई पिन आदि हासिल कर खाते से रुपए निकाल लेते हैं। साथ ही कुछ मामलों में ठग खुद को गैस एजेंसी का कर्मचारी बताकर कॉल के जरिए भी ठगी करने का प्रयास करते हैं। पुलिस अधीक्षक ने स्पष्ट किया कि अधिकृत गैस एजेंसियां इस प्रकार से अनजान लिंक भेजकर या कॉल कर तत्काल भुगतान की मांग नहीं करती हैं, इसलिए ऐसे किसी भी संदेश या कॉल पर भरोसा न करें।

विनोद कुमार, एसपी, हांसी।

चोरी के सामान के साथ आरोपित गिरफ्तार

हिसार। अग्रोहा पुलिस ने चोरी की एक वारदात को सुलझाकर आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से चोरी किया गया सामान भी बरामद कर लिया है। आरोपी की पहचान कुलेरी निवासी आजाद के रूप में हुई है। अग्रोहा थाना प्रभारी प्रवेश कुमार ने बताया कि इस संबंध में 12 क्वार्टर हिसार निवासी रामसिंह ने पुलिस को शिकायत दी थी। शिकायत में उसने बताया कि चौहान कॉलोनी, अग्रोहा स्थित उनके पुराने मकान में उनका कुछ सामान रखा हुआ था। पड़ोसियों से सूचना मिलने पर जब उन्होंने मकान का मुआयना किया, तो वहां से एक फ्रिज, दो कुलर, एक वाशिंग मशीन और बर्तन गायब मिले। अग्रोहा पुलिस ने मामला दर्ज करके जांच करते हुए आरोपी आजाद को गिरफ्तार कर लिया।

जागरूकता शिविर में लोगों को जनगणना के पहलुओं को बताया

नागरिक जनगणना में सक्रिय भागीदारी निभाएं: एसडीएम

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

जिला में जनगणना के महत्वपूर्ण कार्य को सफल बनाने के उद्देश्य को लेकर एसडीएम एवं जिला जनगणना नोडल अधिकारी राजेश खोथ द्वारा लगातार जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। वे प्रतिदिन विभिन्न स्थानों पर आयोजित शिविरों में भाग लेकर नागरिकों को जनगणना के महत्व के बारे में जागरूक कर रहे हैं।

इस अभियान के तहत नारनौंद नगर पालिका कार्यालय, हांसी नगर परिषद कार्यालय तथा एचएसवीपी ग्राउंड में जागरूकता शिविर आयोजित किए गए, जहां बड़ी संख्या में नागरिकों ने भाग लिया। एसडीएम राजेश खोथ ने नारनौंद तथा हांसी में आयोजित जागरूकता कार्यक्रमों में नागरिकों को संबोधित करते हुए कहा कि 30 अप्रैल 2026 तक नागरिक स्व गणना के माध्यम से स्वयं अपनी जानकारी ऑनलाइन दर्ज कर सकते हैं। नागरिकों को पहली स्व गणना का अवसर दिया जा रहा है। नागरिकों को इस पोर्टल पर अपने परिवार की जानकारी अपलोड कर देश के विकास में भागीदारी करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि जनगणना देश के विकास की आधारशिला है। इसके माध्यम से प्राप्त आंकड़े सरकार को विभिन्न योजनाओं को प्रभावी ढंग से लागू करने में मदद करते हैं। उन्होंने नागरिकों से अपील की कि वे अपनी सही और पूर्ण जानकारी अवश्य दें, ताकि भविष्य की योजनाएं अधिक सटीक और लाभकारी बन सकें।

हांसी। खिलाड़ियों को स्वगणना प्रक्रिया की जानकारी देते एसडीएम राजेश खोथ। फोटो : हरिभूमि

सोना-चांदी या मल्टी-एसेट फंड? निवेश से पहले जानें पूरा गणित

- उच्च रिटर्न के लालच में न करें गलती, जोखिम और रिटर्न का संतुलन ही समझदारी
- बाजार की चाल, जोखिम और लक्ष्य के हिसाब से चुनें सही विकल्प, वरना होगा नुकसान
- गोल्ड ईटीएफ, कमोडिटी फंड और मल्टी-एसेट फंड के फर्क को समझना बेहद जरूरी
- कमोडिटी फंड्स वास्तव में सीधे सोने या चांदी में निवेश नहीं करते
- ये उन कंपनियों के शेयरों में पैसा लगाते हैं जो माइनिंग, मेटल या एनर्जी सेक्टर से जुड़ी

शेयर बाजार और फिक्स्ड डिपॉजिट से आगे बढ़ते हुए अब निवेशक सोना, चांदी, मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड और अन्य कमोडिटी विकल्पों की ओर तेजी से रुख कर रहे हैं। महंगाई, वैश्विक अनिश्चितता और बाजार में उतार-चढ़ाव के दौर में ये एसेट क्लास पोर्टफोलियो को संतुलन देने का काम करते हैं। लेकिन समस्या तब पैदा होती है, जब निवेशक अलग-अलग विकल्पों कमोडिटी फंड, गोल्ड-सिल्वर ईटीएफ और मल्टी-एसेट फंड को एक जैसा मान लेते हैं। यही भ्रम कई बार गलत निवेश फैसलों और नुकसान की वजह बनता है। सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि कमोडिटी फंड्स वास्तव में सीधे सोने या चांदी में निवेश नहीं करते। ये फंड उन कंपनियों के शेयरों में पैसा लगाते हैं जो माइनिंग, मेटल या एनर्जी सेक्टर से जुड़ी होती हैं। यानी इनका प्रदर्शन केवल कमोडिटी की कीमत पर नहीं, बल्कि उन कंपनियों के बिजनेस, मैनेजमेंट और मार्केट कंडीशन पर भी निर्भर करता है। इस कारण ये फंड तकनीकी रूप से इक्विटी फंड की श्रेणी में आते हैं और इनमें जोखिम भी उसी के अनुरूप अधिक होता है।

कमोडिटी फंड : हाई रिस्क, साइकिल पर निर्भर रिटर्न

कमोडिटी फंड्स का प्रदर्शन "कमोडिटी साइकिल" पर आधारित होता है। जब मेटल या एनर्जी सेक्टर में तेजी आती है, तो ये फंड अच्छा रिटर्न दे सकते हैं, लेकिन गिरावट के समय इनका प्रदर्शन तेजी से नीचे भी आ सकता है। यही वजह है कि विशेषज्ञ इन्हें लॉन्ग टर्म कोर इन्वेस्टमेंट के रूप में नहीं देखते। आमतौर पर 1 से 3 साल के लिए, किसी खास सेक्टर में तेजी का फायदा उठाने के लिए ही इनका उपयोग किया जाता है। निवेश सलाहकारों के अनुसार, पोर्टफोलियो में इनका हिस्सा 5% से 10% से ज्यादा नहीं होना चाहिए। अधिक निवेश जोखिम को बढ़ा सकता है। साथ ही, इनमें निवेश करने से पहले बाजार की स्थिति और सेक्टर ट्रेंड को समझना बेहद जरूरी है।

गोल्ड और सिल्वर ईटीएफ कीमत से जुड़ा निवेश

अगर आपका उद्देश्य सीधे सोने या चांदी की कीमतों में होने वाले बदलाव का लाभ उठाना है, तो गोल्ड ईटीएफ और सिल्वर ईटीएफ बेहतर विकल्प हैं। ये फंड फिजिकल गोल्ड या सिल्वर की कीमत को ट्रैक करते हैं, यानी इनका रिटर्न सीधे धातु की कीमत पर निर्भर करता है। इनका सबसे बड़ा फायदा यह है कि आपको फिजिकल गोल्ड खरीदने, स्टोर करने या उसकी सुरक्षा की चिंता नहीं करनी पड़ती। साथ ही, इनकी पारदर्शिता और लिक्विडिटी भी अधिक होती है, क्योंकि इन्हें शेयर बाजार में आसानी से खरीदा और बेचा जा सकता है। हालांकि, इनका रिटर्न आमतौर पर स्थिर और सीमित होता है। ये तेजी से मल्टीबैगर रिटर्न देने के बजाय पोर्टफोलियो को स्थिरता देने का काम करते हैं। इसलिए इन्हें "सेफ हेवन" या हेजिंग टूल के रूप में देखा जाता है।

मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड : संतुलित निवेश का विकल्प

दूसरी ओर, मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड उन निवेशकों के लिए बेहतर विकल्प हैं, जो एक ही निवेश में विविधता (डाइवर्सिफिकेशन) चाहते हैं। ये फंड इक्विटी, डेट और कमोडिटी तीनों एसेट क्लास में निवेश करते हैं। इसका सबसे बड़ा फायदा यह है कि जब एक एसेट क्लास कमजोर प्रदर्शन करता है, तो दूसरा उसे संतुलित कर देता है। उदाहरण के लिए, शेयर बाजार में गिरावट के दौरान सोना बेहतर प्रदर्शन कर सकता है, जिससे कुल पोर्टफोलियो पर असर कम होता है।

पिछले आंकड़ों पर न जाएं

बाजार में आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल म्यूचुअल फंड, एसबीआई म्यूचुअल फंड और क्वांट म्यूचुअल फंड जैसे कई कमोडिटी या मल्टी-एसेट फंड्स उपलब्ध हैं, जिन्होंने पिछले कुछ वर्षों में 20-22% तक का रिटर्न दिया है, लेकिन विशेषज्ञ साफ कहते हैं कि केवल पिछले प्रदर्शन के आधार पर निवेश का फैसला लेना गलत हो सकता है। कमोडिटी सेक्टर स्वभाव से ही अस्थिर होता है। इसलिए इसमें औसतन 10-12% सीएजीआर की उम्मीद रखना ज्यादा व्यावहारिक है।

समझदारी से करें संतुलन

निवेश का कोई एक "सही" विकल्प नहीं होता। यह पूरी तरह आपके लक्ष्य, जोखिम क्षमता और निवेश अवधि पर निर्भर करता है। गोल्ड ईटीएफ और मल्टी-एसेट फंड्स आम निवेशकों के लिए बेहतर और सुरक्षित विकल्प माने जाते हैं, जबकि कमोडिटी फंड्स केवल समझदार और अनुभवी निवेशकों के लिए ही उपयुक्त हैं। अंततः, एक संतुलित पोर्टफोलियो ही लंबे समय में बेहतर रिटर्न और कम जोखिम सुनिश्चित करता है। इसलिए निवेश से पहले जरूरतें समझें, जल्दबाजी से बचें और जहां जरूरी हो, वित्तीय सलाहकार की मदद लें ताकि आपका पैसा सही दिशा में काम कर सके।

स्मॉलकैप एक माह में 10% उछला

जोखिम भी उतना ही बढ़ा

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

पिछले एक महीने में स्मॉलकैप म्यूचुअल फंड्स ने निवेशकों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है। औसतन 10% तक का रिटर्न देकर इस सेगमेंट ने लार्ज और मिडकैप फंड्स को पीछे छोड़ दिया है। ऐसे में कई निवेशकों के मन में सवाल उठ रहा है क्या यह तेजी लंबे समय के बुल रन की शुरुआत है या फिर यह सिर्फ गिरावट के बाद आई एक अस्थायी रिकवरी? विशेषज्ञों का मानना है कि इस तेजी को समझदारी से देखना जरूरी है, क्योंकि जल्दबाजी में लिया गया फैसला नुकसान भी करा सकता है। हालिया आंकड़ों के मुताबिक, स्मॉलकैप म्यूचुअल फंड्स ने पिछले एक महीने में औसतन करीब 10% रिटर्न दिया है। कुछ फंड्स ने तो इससे भी ज्यादा प्रदर्शन किया है, जिससे निवेशकों का भरोसा इस सेगमेंट में फिर से बढ़ा है। हालांकि, सभी फंड्स का प्रदर्शन एक जैसा नहीं रहा। जहां कुछ फंड्स ने दो अंकों का रिटर्न दिया, वहीं कुछ ने नेगेटिव रिटर्न भी दिखाया। इससे साफ है कि यह तेजी पूरे सेगमेंट में समान रूप से नहीं फैली है।

तेजी की वजह: लिक्विडिटी और एसआईपी का सहारा

विशेषज्ञों के अनुसार, स्मॉलकैप फंड्स में आई इस तेजी के पीछे कई कारण हैं। बाजार में बढ़ती लिक्विडिटी, निवेशकों की जोखिम लेने की क्षमता में सुधार और लगातार आने वाला एसआईपी निवेश इस उछाल को सपोर्ट कर रहा है। जब बाजार में नकदी ज्यादा होती है, तो उसका असर छोटे शेयरों पर जल्दी दिखाई देता है। इसी वजह से स्मॉलकैप शेयरों में तेजी अक्सर तेज और अचानक होती है।

क्या यह स्थायी बुल रन है या शॉर्ट टर्म रिकवरी?

यहीं सबसे बड़ा सवाल खड़ा होता है। एक्सपर्ट्स का मानना है कि फिलहाल यह तेजी एक शॉर्ट टर्म रिकवरी ज्यादा लगती है, न कि लंबी अवधि की स्थायी तेजी। स्मॉलकैप सेगमेंट में उतार-चढ़ाव ज्यादा होता है। गिरावट के बाद तेज उछाल आना आम बात है। इसलिए केवल एक महीने के रिटर्न के आधार पर निवेश का फैसला लेना जोखिम भरा हो सकता है।

वैल्यूएशन बनी चिंता

हालिया तेजी के बाद स्मॉलकैप शेयरों की वैल्यूएशन फिर से ऊंची नजर आने लगी है। उदाहरण के तौर पर, निफ्टी स्मॉलकैप 100 का फॉरवर्ड पी/ई अपने लंबे औसत से ऊपर चल रहा है। इसका मतलब है कि शेयरों की कीमतें उनकी कमाई के मुकाबले ज्यादा हो चुकी हैं। ऐसे में आगे रिटर्न सीमित हो सकता है या फिर बाजार में करेक्शन देखने को मिल सकता है।

हर निवेशक के लिए सही नहीं

स्मॉलकैप फंड्स हाई रिस्क कैटेगरी में आते हैं। इनमें तेजी के साथ-साथ गिरावट भी उतनी ही तेज होती है। इसलिए यह हर निवेशक के लिए उपयुक्त नहीं हैं। विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि अगर आपका निवेश समय 7 से 10 साल या उससे ज्यादा है, तभी इस सेगमेंट में निवेश करना चाहिए।

एसआईपी और एसटीपी से एंट्री

स्मॉलकैप में एकमुश्त निवेश करने के बजाय एसआईपी या एसटीपी के जरिए धीरे-धीरे निवेश करना बेहतर रणनीति मानी जाती है। इससे बाजार के उतार-चढ़ाव का असर कम होता है और आप अलग-अलग स्तरों पर निवेश कर पाते हैं, जिससे औसत लागत संतुलित रहती है।

पोर्टफोलियो में सीमित हिस्सा

एक संतुलित निवेश रणनीति के तहत स्मॉलकैप फंड्स का हिस्सा पोर्टफोलियो में सीमित रखना चाहिए। आमतौर पर 10% से 20% तक का एक्सपोजर पर्याप्त माना जाता है, जो जोखिम और रिटर्न के बीच संतुलन बनाए रखता है। इसके अलावा, फ्लेक्सी कैप और मल्टीकैप फंड्स जैसे विकल्प भी बेहतर संतुलन प्रदान कर सकते हैं।

पीछे भागना क्यों खतरनाक

अक्सर निवेशक हालिया प्रदर्शन देखकर आकर्षित हो जाते हैं और तेजी से निवेश कर देते हैं। लेकिन 10% जैसे अल्पकालिक रिटर्न का पीछा करना सही रणनीति नहीं है। बाजार में ऐसे मूवमेंट अस्थायी होते हैं और समय के साथ संतुलित हो जाते हैं। इसलिए केवल हालिया रिटर्न देखकर निवेश करना नुकसान का कारण बन सकता है।

अवसर है, पर अलर्ट रहें

स्मॉलकैप म्यूचुअल फंड्स में हालिया तेजी निश्चित रूप से ध्यान देने योग्य है, लेकिन इसे "पैसे छापने का मौका" मानना जल्दबाजी होगी। लंबी अवधि के निवेशक एसआईपी के जरिए इसमें धीरे-धीरे निवेश कर सकते हैं, लेकिन पोर्टफोलियो में संतुलन बनाए रखना बेहद जरूरी है।

एमएफ के नाम में छिपा पूरा खेल : 'डायरेक्ट रेगूलर और ग्रोथ' का सही मतलब समझें

म्यूचुअल फंड में निवेश करना आजकल बहुत आसान हो गया है, लेकिन सही फंड का चुनाव करना आज भी कई लोगों के लिए बड़ी चुनौती है। बता दें कि जब आप किसी ऐप या वेबसाइट पर फंड सर्च करते हैं, तो एक ही नाम के कई ऑप्शन नजर आते हैं। दरअसल, इन नामों में निवेश की पूरी रणनीति छिपी होती है। अगर आप इन बेसिक शब्दों का मतलब समझ लेते हैं, तो आप अपने वित्तीय लक्ष्यों के अनुसार सही फंड का चुनाव कर सकते हैं।

निवेश की कैटेगरी को पहचानें

म्यूचुअल फंड के नाम की शुरुआत एएमसी से होती है, जैसे एसबीआई, अक्षम या आईसीआईसीआई प्रूडेंटियल। यह वो संस्था है जो आपके पैसे को मैनेज करती है। नाम के अगले हिस्से में फंड की कैटेगरी होती है। जैसे लार्ज कैप का अर्थ है कि पैसा देश की टॉप 100 सुरक्षित कंपनियों में लगेगा। वहीं, स्मॉल कैप या मिड कैप में पैसा उन कंपनियों में लगाया जाता है जो तेजी से बढ़ रही हैं, हालांकि इनमें जोखिम थोड़ा ज्यादा होता है।

खर्च और मुनाफे का अंतर

फंड के नाम में डायरेक्ट और रेगूलर सबसे अहम शब्द हैं। डायरेक्ट का मतलब है कि आप सीधे फंड हाउस के साथ निवेश कर रहे हैं। इसमें कोई एजेंट नहीं होता, इसलिए एक्सपेंस रेशियो कम होता है और आपका मुनाफा बढ़ जाता है। इसके विपरीत, रेगूलर प्लान किसी बैंक या ब्रोकर के जरिए लिया जाता है, जहां आपको दी जाने वाली सुविधाओं के बदले कंपनी एजेंट को कमीशन देती है, जिससे आपका शुद्ध मुनाफा थोड़ा कम हो जाता है।

रिटर्न पाने का तरीका चुनें

नाम के आखिरी हिस्से में आपको ग्रोथ या आईडीडब्ल्यूसी लिखा मिलेगा। बता दें कि अगर आप लंबे समय के लिए पैसा जोड़ना चाहते हैं, ग्रोथ ऑप्शन चुनें क्योंकि इसमें मुनाफे पर कंपाउंडिंग का लाभ मिलता है। लेकिन अगर आप चाहते हैं कि आपको निवेश के बीच-बीच में कुछ कमाई मिलती रहे, तो आईडीडब्ल्यूसी प्लान लिया जा सकता है।

स्मार्ट निवेशक बनने के लिए जरूरी टिप्स

म्यूचुअल फंड चुनते समय सिर्फ पिछले रिटर्न को ना देखें, बल्कि इन चारों यानी एएमसी, कैटेगरी, प्लान टाइप और रिटर्न मोड को परखें। अपनी रिस्क लेने की क्षमता और समय सीमा के आधार पर ही सही ऑप्शन का चुनाव करें। हमेशा कोशिश करें कि डायरेक्ट और ग्रोथ ऑप्संश पर गौर करें जिससे लंबी समय में आपकी जमा पूंजी पर कमीशन का बोझ न पड़े और आपको अधिकतम लाभ मिल सके। म्यूचुअल फंड का नाम भले ही जटिल लगे, लेकिन इसमें निवेश का पूरा ब्लूप्रिंट छिपा होता है। म्यूचुअल फंड में सफल होने के लिए जरूरी है कि आप इन बुनियादी शब्दों को समझें और सोच-समझकर फैसला लें। सही जानकारी के साथ किया गया निवेश ही लंबे समय में संपत्ति निर्माण का मजबूत आधार बनता है।

बिजनेस डेस्क

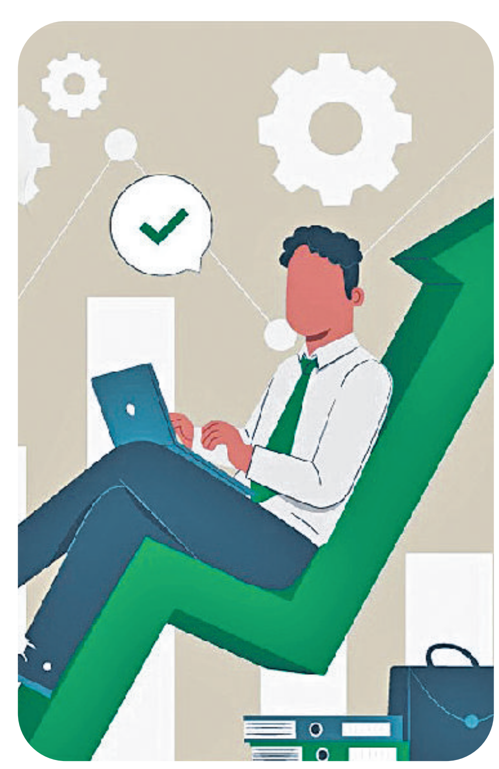

अब आईटीआर में गलती की तो पड़ सकती है भारी

गलत इनकम बताई तो 200% तक जुर्माना

- छोटी चूक भी बन सकती है बड़ी सजा का कारण
- जानबूझकर जानकारी छिपाने पर दोगुना तक जुर्माना
- लेट फाइलिंग व दस्तावेजों में कमी पर भी कड़ा प्रावधान

बिजनेस डेस्क

आयकर रिटर्न यानी आईटीआर भरना अब केवल एक औपचारिक प्रक्रिया नहीं रह गया है, बल्कि यह पूरी तरह जिम्मेदारी और सतर्कता का काम बन चुका है। आयकर विभाग ने असेसमेंट ईयर 2026–27 के लिए नया पेनल्टी फ्रेमवर्क लागू किया है, जिसमें गलत जानकारी देने वाले टैक्सपेयर्स पर कड़ी कार्रवाई का प्रावधान किया गया है। इस नए सिस्टम का मकसद साफ है। टैक्स अनुपालन को सख्ती से लागू करना और किसी भी तरह की लापरवाही या हेरफेर को हतोत्साहित करना।

गलत इनकम दिखाना पड़ सकता है भारी

नए नियमों के तहत यदि कोई टैक्सपेयर्स अपनी वास्तविक आय से कम इनकम दिखाता है, तो उसे देय टैक्स पर 50 प्रतिशत तक जुर्माना भरना पड़ सकता है। यह जुर्माना उन मामलों में लागू होता है जहां गलती को अनजाने में हुई चूक माना जाता है। लेकिन अगर जांच में यह साबित हो जाता है कि इनकम को जानबूझकर छिपाया गया है या गलत जानकारी दी गई है, तो सजा और भी कड़ी हो जाती है। ऐसे मामलों में पेनल्टी बढ़ाकर 200 प्रतिशत तक की जा सकती है। यानी जितना टैक्स बचाने की कोशिश की गई, उसका दोगुना तक जुर्माना देना पड़ सकता है।

जानबूझकर गलती और सामान्य चूक में फर्क

सरकार ने इस बार नियमों में यह स्पष्ट किया है कि जानबूझकर की गई गलती और सामान्य त्रुटि में अंतर किया जाएगा। उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति ने भूलवश कोई इनकम जोड़ना रह गया, तो उसे उतनी सख्ती से नहीं देखा जाएगा जितना कि किसी ऐसे मामले को जहां दस्तावेज छिपाए गए हों या फर्जी एंट्री की गई हो। यह अंतर इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे ईमानदार टैक्सपेयर्स को राहत मिलती है, जबकि धोखाधड़ी करने वालों पर सख्ती बढ़ती है।

लेट आईटीआर पर भी सख्त नियम

समय पर आईटीआर फाइल न करने पर भी अब जुर्माने का प्रावधान पहले से स्पष्ट और कड़ा कर दिया गया है। यदि कोई व्यक्ति तय समय सीमा के बाद आईटीआर भरता है, तो उसे अधिकतम 5000 रुपये तक का जुर्माना देना पड़ सकता है। हालांकि, जिन टैक्सपेयर्स की सालाना आय 5 लाख रुपये तक है, उनके लिए राहत देते हुए जुर्माना 1000 रुपये तक सीमित रखा गया है। इसका उद्देश्य छोटे करदाताओं को अनावश्यक बोझ से बचाना है, लेकिन समय पर फाइलिंग की जिम्मेदारी से छूट नहीं दी गई है।

टीडीएस और अन्य दस्तावेजों में देरी भी महंगी

सिर्फ आईटीआर ही नहीं, बल्कि टीडीएस और अन्य जरूरी स्टेटमेंट समय पर जमा न करने पर भी सख्त कार्रवाई का प्रावधान है। ऐसे मामलों में 200 रुपये प्रतिदिन के हिसाब से जुर्माना लगाया जा सकता है, जो समय के साथ बड़ी राशि में बदल सकता है। इससे साफ है कि टैक्स सिस्टम अब पूरी तरह समयबद्ध और अनुशासित हो चुका है, जहां हर देरी की कीमत चुकानी पड़ सकती है।

टैक्स बकाया रखने पर भी कार्रवाई

यदि कोई व्यक्ति अपना सेल्फ-असेसमेंट टैक्स समय पर नहीं चुकाता है, तो उस पर भी पेनल्टी लग सकती है। यह पेनल्टी असेसिंग ऑफिसर द्वारा तय की जाती है और कई मामलों में बकाया टैक्स के बराबर तक हो सकती है। गंभीर मामलों में, खासकर जब जांच के दौरान छिपी हुई आय सामने आती है, तो 10 प्रतिशत से लेकर 60 प्रतिशत तक अतिरिक्त जुर्माना भी लगाया जा सकता है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि गलती कितनी गंभीर है और उसे कब उजागर किया गया।

अन्य उल्लंघनों पर कड़ी नजर

नए नियम केवल इनकम छिपाने तक सीमित नहीं हैं। यदि कोई व्यक्ति अपने अकाउंट बुक्स ठीक से नहीं रखता, जरूरी ऑडिट नहीं कराता, दस्तावेज समय पर जमा नहीं करता या कैश ट्रांजैक्शन के नियमों का उल्लंघन करता है, तो उस पर भी जुर्माना लगाया जा सकता है। कुछ मामलों में यह जुर्माना लेन-देन की पूरी राशि के बराबर तक हो सकता है, जो किसी भी व्यवसाय या व्यक्ति के लिए बड़ा वित्तीय झटका साबित हो सकता है।

राहत के प्रावधान भी मौजूद

हालांकि सख्ती के बीच सरकार ने कुछ राहत के विकल्प भी दिए हैं। यदि कोई टैक्सपेयर्स यह साबित कर देता है कि उससे हुई गलती किसी वाजिब कारण से हुई थी, जैसे तकनीकी समस्या या वास्तविक भूल, तो उस पर पेनल्टी नहीं लगाई जाएगी। इसके अलावा, कुछ मामलों में अपील और स्पष्टीकरण के आधार पर भी जुर्माने में राहत मिल सकती है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि ईमानदार करदाता अनावश्यक रूप से परेशान न हों।

सतर्कता ही बचाव का सबसे बड़ा तरीका

इन नए नियमों के बाद यह साफ हो गया है कि आईटीआर भरते समय लापरवाही की कोई गुंजाइश नहीं है। हर जानकारी को सही दस्तावेजों के साथ जांचकर ही भरना चाहिए। विशेषज्ञों की सलाह है कि यदि टैक्स फाइलिंग को लेकर किसी भी तरह का संदेह हो, तो पेशेवर सलाह लेना बेहतर है। छोटी सी गलती भी बड़े जुर्माने में बदल सकती है, इसलिए सतर्क रहना ही सबसे सुरक्षित विकल्प है।

आयकर विभाग का स्पष्ट संदेश

नए पेनल्टी नियम यह संकेत देते हैं कि टैक्स सिस्टम अब ज्यादा पारदर्शी और सख्त हो चुका है। आयकर विभाग का स्पष्ट संदेश है ईमानदारी से टैक्स भरें या भारी जुर्माने के लिए तैयार रहें। ऐसे में समझदारी इसी में है कि जल्दबाजी या लापरवाही से बचते हुए पूरी सावधानी के साथ आईटीआर फाइल किया जाए, क्योंकि अब छोटी गलती भी बड़ी सजा में बदल सकती है।

25,000 की एसआईपी के लिए 3 से 5 फंड ही काफी

छोटी एसआईपी में बंटवारे से कंपाउंडिंग पर पड़ता है असर

म्यूचुअल फंड पोर्टफोलियो में भीड़ बढ़ाना पड़ सकता है भारी, घट सकता है रिटर्न

बिजनेस डेस्क

अक्सर निवेशक यह मान लेते हैं कि ज्यादा म्यूचुअल फंड्स में पैसा लगाने से जोखिम कम हो जाता है और रिटर्न बेहतर मिलता है। इसी सोच के चलते कई लोग 10 से 12 या उससे भी ज्यादा फंड्स में एसआईपी शुरू कर देते हैं। लेकिन हकीकत इससे उलट है। जरूरत से ज्यादा फंड्स रखने से न तो जोखिम कम होता है और न ही रिटर्न बढ़ता है, बल्कि आपका पोर्टफोलियो उलझ जाता है और मुनाफा कम हो सकता है। खासतौर पर अगर आपकी मासिक एसआईपी 25,000 रुपये के आसपास है, तो 3 से 5 अच्छे फंड्स का चयन ही बेहतर रणनीति मानी जाती है।

ज्यादा फंड्स रखना क्यों नुकसान का सौदा

म्यूचुअल फंड निवेश का मूल सिद्धांत है। विविधता, लेकिन कई निवेशक इस सिद्धांत को गलत तरीके से समझ लेते हैं। वे सोचते हैं कि अलग-अलग (एसेट मैनेजमेंट कंपनी) के ज्यादा फंड्स खरीदना ही विविधता है, जबकि ऐसा नहीं है। अगर आपके पास 10–12 फंड्स हैं, तो संभव है कि उनमें से कई एक ही सेक्टर या एक जैसे शेयरों में निवेश कर रहे हों। ऐसे में आपका पोर्टफोलियो देखने में तो बड़ा लगता है, लेकिन असल में वह विविध नहीं होता। विशेषज्ञ मानते हैं कि सीमित और चुने हुए फंड्स के जरिए बेहतर नियंत्रण और संतुलन बनाना ज्यादा आसान होता है। इससे निवेश की दिशा स्पष्ट रहती है और अनावश्यक जटिलता से बचाव होता है।

अलग नाम, लेकिन निवेश वही

जब आप कई फंड्स में निवेश करते हैं, तो एक बड़ी समस्या होती है—पोर्टफोलियो ओवरलैप। मान लीजिए आपने दो या तीन लार्ज-कैप फंड्स ले रखे हैं। इनमें से हर फंड में रिलायंस, इन्फोसिस या एचडीएफसी बैंक जैसे बड़े शेयर टॉप होल्डिंग में हो सकते हैं। इसका मतलब है कि आप अलग-अलग फंड्स के जरिए एक ही कंपनियों में बार-बार निवेश कर रहे हैं।

इससे दो नुकसान होते हैं

जोखिम कम होने की बजाय बढ़ सकता है, क्योंकि बाजार गिरने पर सभी फंड्स एक साथ प्रभावित होते हैं। आप हर फंड का अलग-अलग एक्स्पेंस रेशियो (खर्च) भी देते हैं, जिससे कुल रिटर्न घटता है। इस तरह, ज्यादा फंड्स रखने से निवेश में विविधता का भ्रम तो बनता है, लेकिन असल फायदा नहीं मिलता।

छोटी एसआईपी से कंपाउंडिंग कमजोर

यदि 25,000 की मासिक एसआईपी को आप 8 या 10 फंड्स में बांटते हैं, तो हर फंड में बहुत कम राशि जाती है। उदाहरण के तौर पर 8 फंड्स में निवेश करने पर हर फंड में सिर्फ 3,125 ही जाएंगे। इतनी छोटी राशि में कंपाउंडिंग का प्रभाव कमजोर पड़ जाता है। लंबे समय में बड़ा कॉर्पस बनाने के लिए जरूरी है कि हर फंड में पर्याप्त निवेश हो, ताकि उसका ग्रोथ प्रभावी तरीके से दिखाई दे। अगर यही 25,000 रुपये आप 3 या 4 फंड्स में लगाते हैं, तो हर फंड में 6,000 से 8,000 रुपये तक का निवेश होगा, जिससे रिटर्न बेहतर तरीके से बढ़ सकता है।

ट्रैकिंग और मैनेजमेंट बन जाता है मुश्किल

ज्यादा फंड्स का एक और बड़ा नुकसान है—उन्हें ट्रैक करना कठिन हो जाता है। हर फंड का प्रदर्शन अलग होता है। कुछ अच्छा रिटर्न देते हैं, तो कुछ कमजोर प्रदर्शन करते हैं। अगर आपके पास बहुत ज्यादा फंड्स हैं, तो यह समझना मुश्किल हो जाता है कि कौन सा फंड अच्छा कर रहा है और किसे बदलने की जरूरत है। इसके अलावा, कमजोर फंड्स आपके पूरे पोर्टफोलियो के रिटर्न को नीचे खींच लेते हैं। इसे "डाइल्यूशन" कहा जाता है। यानी अच्छे फंड्स का फायदा भी पूरी तरह नहीं मिल पाता।

आदर्श पोर्टफोलियो कैसा हो

विशेषज्ञों के अनुसार 25,000 रुपये की एसआईपी के लिए 3 से 5 फंड्स का पोर्टफोलियो पर्याप्त होता है। इससे निवेश में संतुलन बना रहता है और जोखिम भी नियंत्रित रहता है। एक संतुलित पोर्टफोलियो के लिए आप इन कैटेगरी पर विचार कर सकते हैं।

- लार्ज-कैप या इंडेक्स फंड
  स्थिरता के लिए
- लार्ज एंड मिड-कैप फंड
  ग्रोथ और स्थिरता का मिश्रण
- मल्टी-कैप या फ्लेक्सी-कैप फंड
  अलग-अलग मार्केट कैप में निवेश
- एग्रेसिव हाइब्रिड फंड
  इक्विटी और डेट का संतुलन
- ईएलएसएस फंड (टैक्स सेविंग)
  टैक्स बचत के साथ निवेश
- हर निवेशक अपनी जोखिम क्षमता, लक्ष्य और समय अवधि के अनुसार इन कैटेगरी में 3–5 फंड्स चुन सकता है।

कैसे सुधारें अपना मौजूदा पोर्टफोलियो

अगर आपके पोर्टफोलियो में पहले से ही बहुत ज्यादा फंड्स हैं, तो घबराने की जरूरत नहीं है। आप इसे धीरे-धीरे सुधार सकते हैं। सबसे पहले, ओवरलैप चेक करें। इसके लिए कई ऑनलाइन टूल्स उपलब्ध हैं, जो बताते हैं कि आपके फंड्स में कितनी समानता है। इसके बाद उन फंड्स को पहचानें जो लगातार 2–3 साल से अपने बेंचमार्क से कमजोर प्रदर्शन कर रहे हैं। ऐसे फंड्स को धीरे-धीरे बाहर निकालें। ध्यान रखें कि एक ही कैटेगरी के कई फंड्स रखने से बचें। हर कैटेगरी से एक अच्छा और भरोसेमंद फंड चुनना बेहतर होता है। साथ ही, पोर्टफोलियो में बदलाव एकदम से न करें, बल्कि चरणबद्ध तरीके से करें ताकि बाजार के उतार-चढ़ाव का असर कम पड़े।

विविधता का सही मतलब समझें

असली विविधता का मतलब यह नहीं है कि आप ज्यादा से ज्यादा फंड्स खरीद लें। बल्कि इसका मतलब है कि आप अलग-अलग एसेट क्लास और कैटेगरी में निवेश करें। अगर आपने अलग-अलग कैटेगरी के 3–5 फंड्स चुने हैं, तो यह पर्याप्त विविधता देता है। इसके विपरीत, एक ही कैटेगरी के 8–10 फंड्स रखना सिर्फ जटिलता बढ़ाता है। इसलिए निवेश करते समय "कम लेकिन बेहतर" की रणनीति अपनाना ज्यादा समझदारी भरा कदम है।

यह रखें ध्यान

म्यूचुअल फंड निवेश में संख्या नहीं, गुणवत्ता मायने रखती है। ज्यादा फंड्स रखने से पोर्टफोलियो मजबूत नहीं होता, बल्कि उलझन बढ़ती है और रिटर्न पर असर पड़ता है। 25,000 रुपये की एसआईपी के लिए 3 से 5 अच्छी तरह चुने गए फंड्स ही पर्याप्त हैं। इससे न केवल कंपाउंडिंग का फायदा बेहतर मिलता है, बल्कि निवेश को समझना और मैनेज करना भी आसान रहता है। अंततः, सफल निवेश वही है जो सरल, संतुलित और आपके लक्ष्यों के अनुरूप हो।

खबर संक्षेप

सृष्टि स्कूल में हाउस हेड का चयन कर किया सम्मानित

नारनौंद। सृष्टि इंटरनेशनल स्पोर्ट्स स्कूल मोठ में चारों सदन भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु व नेताजी सुभाष के हाउस हेड का चयन किया गया। इस चयन प्रक्रिया के अंतर्गत प्रत्येक सदन के लिए हेड बॉय एवं हेड गर्ल का चयन किया गया। सभी विद्यार्थियों ने चयनित हाउस हेड्स का स्वागत किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य ने अपने संबोधन में कहा कि हाउस प्रणाली विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता, टीम वर्क, अनुशासन एवं प्रतिस्पर्धात्मक भावना को विकसित करने का एक सशक्त माध्यम है, जो उनके समग्र व्यक्तित्व विकास में सहायक सिद्ध होता है।

पारिवारिक विवाद में हुई पंचायत में खूनी संघर्ष

हिसार। बालसमंद क्षेत्र में घरेलू कलह सुलझाने के लिए बुलाई गई पंचायत उस समय हिंसक झड़प में बदल गई, जब पंचायत सदस्यों और परिजनों के बीच कहासुनी हो गई। इस मामले में पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए दो मुख्य आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। उन्हें अदालत में पेश किया गया, जहां से उन्हें न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। इस संबंध में पुलिस को दिए बयान में शिकायतकर्ता बालसमंद निवासी रवीना ने बताया कि 17 अप्रैल को दोपहर करीब 3:30 बजे वह अपने ससुर रूपचंद और सास संतोष के साथ घर पर थी। इसी दौरान उसकी देवरानी सुमन अपने मायके और ससुराल पक्ष के अन्य लोगों के साथ घर आई। घर पर घरेलू कलह के समाधान के लिए बातचीत और पंचायत चल रही थी। तभी देवरानी सुमन ने अपने सास-ससुर को साथ रखने से मना कर दिया। इसी बात पर विवाद गहरा गया और सुमन के साथ आए व्यक्तियों ने रवीना और उनके परिवार पर हमला कर दिया।

गांव डाटा में लाइनमैन की नियुक्ति की मांग

हांसी। गांव डाटा में बिजली व्यवस्था पिछले करीब एक वर्ष से अव्यवस्थित बनी हुई है। गांव में नियमित लाइनमैन की नियुक्ति न होने के कारण बिजली संबंधी दिक्कतों का समय पर समाधान नहीं हो पा रहा है। तार टूटने, ट्रांसफॉर्मर खराब होने या अन्य तकनीकी फॉल्ट आने पर कई-कई घंटे और कभी-कभी दिनों तक बिजली आपूर्ति बाधित रहती है। ग्रामीणों का आरोप है कि बिजली निगम को बार-बार शिकायत देने के बावजूद समस्या का स्थायी समाधान नहीं किया गया।

पंच के लिए गांव कोथ कलां से आया एक आवेदन

नारनौंद। प्रदेश में 10 मई को पंचायती उपचुनाव होने हैं। नामांकन भरने का शनिवार को आखिरी दिन था। नारनौंद ब्लॉक के गांव कोथ कलां के वार्ड के पंच के लिए शनिवार को एक ही आवेदन जमा हुआ है। नारनौंद ब्लॉक में गांव कोथ कलां के वार्ड नंबर पांच में पंच कुलदीप का सरकारी नौकरी में चयन हो गया था। उसके बाद उन्होंने अपना त्यागपत्र विभाग को भेज दिया था। 29 जनवरी 2025 को उनका त्यागपत्र स्वीकार कर लिया गया। उसके बाद से ही इस वार्ड के पंच का पद खाली था। उपचुनाव की घोषणा हुई की 10 मई को पंचायत में खाली पड़े पदों का चुनाव होगा।

गुजवि में विकसित भारत 2047 के राष्ट्रीय लक्ष्य को लेकर सम्मेलन

भारत का विज्ञान और दर्शन सदियों से विश्व में श्रेष्ठ रहा : प्रो. शर्मा

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

हरियाणा राज्य उच्चतर शिक्षा परिषद (एचएसएचईसी) के अध्यक्ष प्रो. के.सी. शर्मा ने कहा है कि भारत का विज्ञान और दर्शन सदियों से विश्व में श्रेष्ठ रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा में ही आधुनिक विज्ञान की जड़ें हैं। आज के युवाओं के लिए आधुनिक विज्ञान को अपनाना तो आवश्यक है, लेकिन उनके लिए भारत की सामाजिक तथा सांस्कृतिक आवश्यकताओं को समझना भी जरूरी है। प्रो. के.सी शर्मा राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस 2026 के उपलक्ष्य पर, विज्ञान भारती हरियाणा (विभा) व गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय हिसार (गुजविप्रौवि) द्वारा विकसित भारत '2047' के राष्ट्रीय लक्ष्य के अनुरूप विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संगोष्ठी तथा 'विकसित भारत हेतु नवाचार एवं प्रौद्योगिकी' पर हुए अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन (एसटीसी एंड आईसीआईटी 2026) के समापन समारोह को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। विश्वविद्यालय के सीआरएस सभागार में हुए इस कार्यक्रम का आयोजन विज्ञान भारती हरियाणा और गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय हिसार द्वारा किया गया। इसे हरियाणा राज्य विज्ञान नवाचार एवं प्रौद्योगिकी परिषद द्वारा प्रायोजित किया गया। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं विज्ञान विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केंद्रके सहयोग से हुए सम्मेलन के समापन समारोह में विज्ञान भारती के राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री प्रवीन रामदास तथा अंतर विश्वविद्यालय त्वरक केंद्र, नई दिल्ली के निदेशक प्रो. अविनाश चन्द्र पांडेय विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। गुजवि के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई, हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. कांबोज, लुवास के कुलपति प्रो. विनोद कुमार वर्मा तथा गुजवि के कुलसचिव डा. विजय कुमार भी मुख्य मंच पर उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संयोजन प्रो. एम.के. शर्मा ने किया।

हिसार। गुजवि में प्रतिभागी विजेताओं को सम्मानित करते मुख्यातिथि प्रो. के.सी. शर्मा व कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई। *फोटो : हरिभूमि*

अतीत को लेकर गौरव का भाव होना चाहिए

विशिष्ट अतिथि प्रवीन रामदास ने अपने संबोधन में कहा कि विज्ञान भारती द्वारा भारत की महान विज्ञान विरासत को न केवल संरक्षित किया जा रहा है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी इससे अवगत करवाया जा रहा है। हमें यह याद रखना चाहिए कि हमारे पूर्वजों ने किस प्रकार विज्ञान व नवाचार के क्षेत्र में अग्रणी कार्य किया था। हममें अतीत को लेकर गौरव का भाव होना चाहिए। विशिष्ट अतिथि प्रो. अविनाश चंद्र पाण्डेय ने कहा कि वर्तमान युवा पीढ़ी की विशेषता है कि यह पीढ़ी न केवल कौशलयुक्त है, बल्कि अपने समक्ष आने वाली चुनौतियों सामना करने के लिए भी तैयार है। विकसित भारत की परिकल्पना को साकार करने में इस पीढ़ी की भूमिका अग्रणी रहेगी।

अर्थव्यवस्था की दिशा में बढ़ा भारत

कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने अपने स्वागत सम्बोधन में कहा कि यह सम्मेलन अपने उद्देश्य की पूर्ति में पूर्णतया सफल रहा। मशीन लर्निंग, क्वांटम कंप्यूटिंग, साइबर सिक्योरिटी, बायोटेक्नोलॉजी, रिन्यूएबल एनर्जी, टेक्नोलॉजी, स्मार्ट हैल्थकेयर जैसी तकनीकों ने यह साबित कर दिया है कि भारत ज्ञानधारी अर्थव्यवस्था की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। एचएयू के कुलपति प्रो. बी.आर. कांबोज ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा के महान ज्ञान को सूचीबद्ध करना आवश्यक है। लुवास के कुलपति प्रो. विनोद कुमार वर्मा ने कहा कि इस दो दिवसीय कार्यक्रम में हमने विचार-विमर्श किया कि भारत को 2047 तक विकसित भारत के रूप में ले जाएंगे।

प्रतियोगिताओं के परिणाम इस प्रकार रहे

विविएम के हरियाणा कार्डिनेटर डा. विवेक गुप्ता ने बताया कि हैकाथॉन इवेंट में टेकतरंग हैकाथॉन प्रतियोगिता में गुजवि की टीम क्विकक्यू के फरहन खान शेनू, लवनया व सृष्टि दिवानी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। चंडीगढ़ विश्वविद्यालय की टीम टेकइनोवेट के अनीष चैहान, अक्षत राज, यश प्रताप सिंह व विशाल चैहान ने द्वितीय तथा गुजविप्रौवि की टीम हैक4 हैल्थ की जीविका, संजू व मोहित यादव तृतीय स्थान पर रहे। बैस्ट ओरल प्रतियोगिता में रिचा खिरबट व जितेन्द्र ने प्रथम, प्रियंका व गर्वित कुमार ने द्वितीय तथा पविश्रा कोलूरू व विनय कुमार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। बैस्ट पोस्टर प्रतियोगिता में खुशबू डोरवा व सतीश प्रथम, नीरज व दीपिका चैधरी दूसरे तथा पूनम व नील कमल तीसरे स्थान पर रहे।

हिसार। कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई को आधिकारिक पत्र सौंपते विभागाध्यक्ष प्रो. ओम प्रकाश सांगवान एवं विद्यार्थी हितेश राव। *फोटो : हरिभूमि*

गुजवि व 633 ईएमई बटालियन के बीच तकनीकी समझौता

- विश्वविद्यालय के शोध एवं नवाचार को नई दिशा प्रदान करेगा यह सहयोग : प्रो. बिश्नोई

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कंप्यूटर साइंस एवं इंजीनियरिंग विभाग की ओर से प्रस्तुत एक महत्वपूर्ण परियोजना प्रस्ताव को भारतीय सेना की 633 ईएमई बटालियन ने औपचारिक स्वीकृति प्रदान की है। आधिकारिक पत्र के अनुसार, इस परियोजना का क्रियान्वयन 633 ईएमई बटालियन और गुजविप्रौवि के कंप्यूटर साइंस एवं इंजीनियरिंग विभाग के बीच तकनीकी समन्वय एवं आपसी सहयोग से किया जाएगा। यह पहल आधुनिक तकनीकों के माध्यम से सैन्य वाहनों के प्रबंधन और निगरानी प्रणाली को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान देगी। इस परियोजना के मेंटर एवं विभागाध्यक्ष प्रो. ओम प्रकाश सांगवान व इस परियोजना से जुड़े एमटेक सीएसई द्वितीय वर्ष के विद्यार्थी हितेश राव ने आधिकारिक पत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई को सौंपा। इस अवसर पर डीन फैकल्टी ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी प्रो. एचसी गर्ग व एचएसबी के निदेशक प्रो. संजीव कुमार उपस्थित रहे।

नई दिशा में बढ़ते कदम

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने कहा कि यह सहयोग विश्वविद्यालय के शोध एवं नवाचार को नई दिशा प्रदान करेगा और रक्षा क्षेत्र में तकनीकी योगदान को मजबूत बनाएगा। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की पहलें विद्यार्थियों और शोधार्थियों को व्यावहारिक अनुभव प्रदान करने के साथ-साथ राष्ट्र निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

पृथ्वी दिवस पर बच्चों को किया जागरूक

हिसार। जागरूकता कार्यक्रम में हिस्सा लेते विद्यार्थी। *फोटो : हरिभूमि*

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

होली चाइल्ड सीनियर सेकेंडरी स्कूल में पृथ्वी दिवस बड़े उत्साह और जागरूकता के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए विभिन्न गतिविधियों में बढ़-चढ़कर भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत प्रार्थना सभा से हुई, जिसमें पृथ्वी दिवस 2026 की थीम हमारी शक्ति, हमारा ग्रह के अनुरूप पृथ्वी को बचाने और स्वच्छ वातावरण बनाए रखने का संकल्प लिया गया।

विद्यार्थियों द्वारा पोस्टर मेकिंग, स्लोगन लेखन, भाषण और वृक्षारोपण जैसी गतिविधियाँ आयोजित की गईं। इन गतिविधियों के माध्यम से छात्रों ने जल संरक्षण, प्लास्टिक के उपयोग में कमी और हरियाली बढ़ाने का संदेश दिया।विद्यालय के प्रबंध निदेशक आर.एस. सिंधु ने अपने संबोधन में कहा कि पृथ्वी हमारे जीवन का आधार है और इसकी रक्षा करना हम सभी का कर्तव्य है। उन्होंने विद्यार्थियों को दैनिक जीवन में छोटे-छोटे कदम उठाकर पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए प्रेरित किया। प्रधानाचार्या अनीता पन्नू दलाल ने कहा कि आज के समय में पर्यावरण संरक्षण अत्यंत आवश्यक है।

आग से 15 एकड़ गेहूं के फाने जल कर राख

- किसानों का ऐलान, मुआवजा नहीं मिला तो करेंगे प्रदर्शन

हरिभूमि न्यूज ⏭नारनौंद

गांव मिर्चपुर के खेतों में अज्ञात परिस्थितियों में आग लगने के कारण 15 एकड़ गेहूं के फाने जलकर राख हो गए। ग्रामीण और फायर ब्रिगेड गाड़ियों ने मुख्य पर पहुंचकर पर काबू पाया। किसानों ने चेतावनी दी है कि 26 की शाम तक किसानों को उचित मुआवजा और बिजली की लाइन का समाधान नहीं किया गया तो 27 अप्रैल को भारतीय किसान यूनियन के सदस्य नारनौंद के बिजली घर के सामने धरना देकर प्रदर्शन करने का काम करेंगे। किसानों के अनुसार मिर्चपुर गांव के पास खेतों में माइनर पर 33 केवी लाइन जो कि गांव बुडाना से मिर्चपुर जाती है। लाइन फाल्ट हो गया और जिसके कारण आग लग गई। आग लगने से 15 एकड़ के फाने जलकर राख हो गए। फायर ब्रिगेड की गाड़ी ओर डायल 112 पुलिस मौके पर पहुंच गई थी। बिजली निगम को भी सूचना दी गई थी। लेकिन बिजली निगम की तरफ से कोई भी अधिकारी या कर्मचारी मौके पर नहीं पहुंचा। आग लगने से किसान सुरेश के चार एकड़, कृष्ण उर्फ काला के साढ़े चार एकड़, रविंदर उर्फ धोला के चार एकड़, महावीर के डेढ़ एकड़ गेहूं के फाने जल गए। किसानों ने बताया कि ये बिजली की लाइन माइनर के पास खड़े सफेदों के बीच से होकर जाती है।किसान इसकी शिकायत काफी बार बिजली निगम में कर चुके है। लेकिन कोई समाधान नहीं किया गया। इस अवसर पर स्टेट कार्यकारिणी सदस्य रणधीर मिलकपुर, लीला प्रधान, काला, सुरेश प्रधान गुलकणी, बिन्दर नंबरदार अध्यक्ष जींद, प्रकाश लोहान, जयबीर लोहान राजेन्द्र पहलवान, रमेश आदि रहे।

नारनौंद। मिर्चपुर गांव के खेतों में आग लगने के बाद किसान नेता निरीक्षण करते हुए।

समाधान की मांग पर अड़ी भाकियू

आग लगने की सूचना मिलते ही भारतीय किसान यूनियन जींद और हिसार जिले की टीम पहुंच गई। किसानों ने चेतावनी दी है कि अगर 26 अप्रैल तक समाधान नहीं हुआ तो भारतीय किसान यूनियन 27 अप्रैल को नारनौंद के बिजली निगम के गेट पर धरना देगी। इसकी जिम्मेदारी सरकार व प्रशासन की होगी।

अभेराम वार्ड 7 से निर्विरोध पार्षद चुने गए

- अध्यक्ष पद के लिए चार व पार्षद पद के लिए 65 ने किया नामांकन
- उकलाना नगरपालिका चुनाव के लिए नामांकन प्रक्रिया संपन्न

हरिभूमि न्यूज ⏭उकलाना

उकलाना नगर पालिका चुनाव को लेकर नामांकन प्रक्रिया के दौरान अध्यक्ष व पार्षद पद के लिए प्रत्याशियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। नगरपालिका चुनाव 10 मई को प्रस्तावित है। इसके लिए अध्यक्ष पद के चार उम्मीदवारों तथा पार्षद पद के लिए कुल 65 प्रत्याशियों ने अपने नामांकन पत्र दाखिल किए हैं।

इस दौरान वार्ड नंबर 7 से अभेराम मंगला निर्विरोध पार्षद के रूप में चुने गए हैं, क्योंकि उनके मुकाबले में किसी अन्य प्रत्याशी ने नामांकन दाखिल नहीं किया। उनके निर्विरोध चुने जाने पर समर्थकों में खुशी का माहौल है। अध्यक्ष पद के लिए रीमा सोनी, निकिता गोयल, सोनिया बत्रा और मीनू सोनी ने अपने-अपने नामांकन पत्र दाखिल किए हैं।

उकलाना। निर्विरोध पार्षद चुने गए अभेराम मंगला। *फोटो : हरिभूमि*

नामांकन दाखिल

उधर, वार्ड 1 से तीन, वार्ड 2 से तीन, वार्ड 3 से तीन, वार्ड 4 से तीन, वार्ड 5 से चार, वार्ड 6 से तीन, वार्ड 7 से एक, वार्ड 8 से चार, वार्ड 9 से चार, वार्ड 10 से तीन, वार्ड 11 से चार, वार्ड 12 से चार, वार्ड 13 से नौ, वार्ड 14 से आठ, वार्ड 15 से चार तथा वार्ड 16 से छह प्रत्याशियों ने अपने नामांकन दाखिल किए हैं। नगर पालिका चुनाव को लेकर अब क्षेत्र में राजनीतिक गतिविधियां तेज हो गई हैं। विभिन्न प्रत्याशी अपने-अपने स्तर पर जनसंपर्क अभियान शुरू कर चुके हैं और मतदाताओं को अपने पक्ष में करने के प्रयास तेज कर दिए हैं।

नगर परिषद कर्मियों ने की सफाई

- नगर परिषद ने पटेल चौक से समाधा मंदिर तक चलाया सफाई अभियान

हरिभूमि न्यूज ⏭हांसी

नगर परिषद द्वारा शहर को स्वच्छ एवं सुंदर बनाने के उद्देश्य से सैनिटेशन प्लान के तहत पटेल चौक से समाधा मंदिर तक विशेष सफाई अभियान चलाया गया। जिसके अंतर्गत शहर में हर रोज एक सड़क व चौराहे की प्रतिदिन सुनियोजित ढंग से सफाई की जा रही है। इस विशेष अभियान के तहत सफाई कर्मचारियों ने निर्धारित मार्ग पर व्यापक स्तर पर सफाई कार्य किया, जिसमें सड़क किनारे जमी धूल-मिट्टी, कूड़ा-कचरा एवं अन्य अपशिष्ट को हटाकर क्षेत्र को पूर्ण रूप से स्वच्छ बनाया गया। अभियान के दौरान नालियों की सफाई, कचरे का उचित निस्तारण तथा आसपास के वातावरण को साफ-सुथरा रखने पर विशेष ध्यान दिया गया।इस अभियान का नेतृत्व सफाई निरीक्षक संजय कुमार द्वारा किया जा रहा है, जिन्होंने मौके पर उपस्थित कर्मचारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश देते हुए कार्य को प्रभावी ढंग से पूरा करवाया।

हांसी। सरदार वल्लभ भाई पटेल चौक पर सफाई करते सफाई कर्मचारी।

बहुद्देशीय स्वास्थ्य कर्मियों ने भट्ठा मजदूरों को किया जागरूक

हरिभूमि न्यूज ⏭हांसी

विश्व मलेरिया दिवस के अवसर पर शनिवार को गांव सुल्तानपुर के ग्लोबल भट्ठे पर उपस्वास्थ्य केंद्र सुल्तानपुर के स्वास्थ्यकर्मियों द्वारा भट्ठा मजदूरों को मलेरिया से बचाव के बारे में जागरूक करने के लिए विशेष कैंप का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बहुउद्देशीय स्वास्थ्य कार्यकर्ता प्रदीप कुमार ने बताया कि विश्व मलेरिया दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के तहत लगाए गए विशेष कैंप के दौरान भट्ठे पर कार्यरत मजदूरों की मलेरिया, एचबी, बीपी, शुगर की जांच की गई और जांच उपरांत मरीजों को जरूरी दवाएं उपलब्ध करवाई गई। उन्होंने बताया कि कैंप के दौरान उपस्थित लोगों को मलेरिया बीमारी के बचाव एवं लक्षणों की जानकारी प्रदान की गई। इस अवसर पर सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी कन्हैया लाल, स्वास्थ्य कार्यकर्ता ललिता देवी, आशा वर्कर बतुल, सुमन देवी, पूनम देवी उपस्थित रहे।

हांसी। विश्व मलेरिया दिवस पर भट्ठा मजदूरों को जागरूक करते हुए उपस्वास्थ्य केंद्र कार्यकर्ता प्रदीप। *फोटो : हरिभूमि*

मानव एकता दिवस पर संत निरंकारी मिशन ने किया विशेष सत्संग का आयोजन

मानव जीवन का वास्तविक उद्देश्य मानवता की सेवा करना

जब मानवता सर्वोपरि हो, तभी समाज में आता वास्तविक परिवर्तन : संत प्रेम सागर

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

संत निरंकारी मिशन के तत्वावधान में बाबा गुरबचन सिंह जी की पावन स्मृति में मानव एकता दिवस पर सुभाष नगर स्थित संत निरंकारी सत्संग भवन में विशेष सत्संग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सत्संग में पंजाब के पटियाला से पहुंचे संत प्रेम सागर ने कहा कि जब हृदय में करुणा, प्रेम और एकत्व की दिव्य चेतना जागृत होती है, तब मानव अपने सीमित स्वार्थों से ऊपर उठकर सम्पूर्ण सृष्टि के कल्याण का सशक्त माध्यम बन जाता है। परोपकार, करुणा और परमार्थ जैसे अलौकिक मूल्यों से प्रकाशमान यह पावन अवसर उस दिव्य अनुभूति का प्रतीक बना, जहां "मानव को मानव हो प्यारा, एक-दूजे का बने सहारा" का संदेश केवल शब्दों तक सीमित न रहकर हृदयों में जीवंत हुआ।

हिसार। निरंकारी संत मिशन के विशेष सत्संग में प्रवचन करते संत प्रेम सागर।

प्रवचन सुनकार भावविभोर हुए भक्त

संत प्रेम सागर ने कहा कि बाबा हरदेव सिंह जी ने बाबा गुरबचन सिंह जी के जीवन को अपनी प्रेरणा का आधार बनाया। उन्होंने स्पष्ट किया कि मानव जीवन का वास्तविक उद्देश्य मानवता की सेवा करना है। संत प्रेम सागर ने आगे कहा कि भक्तों के जीवन से हमें यह अमूल्य प्रेरणा मिलती है कि यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में मानवता को सर्वोपरि स्थान दे, तो समाज का कल्याण स्वतः संभव है। जब हम एक-दूसरे के लिए उपयोगी बनने का भाव अपनाते हैं, तभी सच्ची सेवा का अर्थ समझ में आता है। आवश्यकता इस बात की है कि हमारे भीतर प्रेम, करुणा और सेवा का भाव निरंतर जीवित रहे। यह केवल आंकड़ों या शब्दों तक सीमित नहीं अपितु मानवता के प्रति सच्चा समर्पण है। इस अवसर पर भिवानी जोन इंचार्ज बलदेव राज नागपाल, हिसार संयोजक संजय खुराना व प्रवक्ता रमेश चुघ आदि भी मौजूद रहे।

खबर संक्षेप

शिविर में 20 लोगों के किए फ्री नेत्र ऑपरेशन

हिसार। दिव्यांग पुनर्वास एवं स्वास्थ्य केंद्र में शिविर आयोजित करके 20 बुजुर्गों की आंखों के सफेद मोतियाबिंद के निशुल्क ऑपरेशन किए गए। इसी श्रृंखला में 28 अप्रैल को सेवार्थ भाव से एक और शिविर आयोजित किया जाएगा। इस शिविर में जरूरतमंद लोगों की आंखों के सफेद मोतियाबिंद के निशुल्क ऑपरेशन अनुभवी व प्रशिक्षित चिकित्सकों द्वारा किए जाएंगे। दिव्यांग केंद्र में यह सुविधा उपलब्ध करवाई गई है कि किसी भी कार्यदिवस में निशुल्क नेत्र ऑपरेशन के लिए बिना कोई शुल्क दिए रजिस्ट्रेशन करवाया जा सकता है। ऑपरेशन के दौरान यथासंभव दवाइयां भी निशुल्क प्रदान की जाएंगी।

ट्रेन विस्तार को लेकर शिष्टमंडल ने दिया ज्ञापन

हिसार। ट्रेन का विस्तार करने के लिए शिष्टमंडल ने जनप्रतिनिधियों से मुलाकात करके उन्हें ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन के माध्यम से भिवानी से हांसी होते हुए लुधियाना जाने वाली ट्रेन का अमृतसर तक विस्तार करने की मांग रखी गई। शिवम सोनी, जितेंद्र ठकराल, नंद किशोर व दिनेश कुमार पर आधारित शिष्टमंडल ने हांसी के विधायक विनोद भयाना व हांसी नगर निगम के चेयरमैन प्रवीण ऐलावादी को ज्ञापन सौंपकर यात्रियों को आने वाली समस्याओं से अवगत करवाया। शिष्टमंडल ने स्पष्ट किया कि अमृतसर तक ट्रेन का विस्तार होने से सैकड़ों यात्री लाभान्वित होंगे और उनकी यात्रा सुगम हो जाएगी।

सुंदर सिंह आप के युवा जिला अध्यक्ष नियुक्त

हिसार। आम आदमी पार्टी हिसार छात्र संघ के जिला अध्यक्ष सुंदर सिंह किरतान को पार्टी ने जिले में प्रमुख जिम्मेवारी सौंपते हुए युवा का जिला अध्यक्ष नियुक्त किया है। उन्हें यह जिम्मेवारी दिए जाने पर सुंदर सिंह किरतान ने पार्टी के शीर्ष नेतृत्व व सभी वरिष्ठ नेताओं का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि पार्टी ने उन पर जो विश्वास व्यक्त किया है उस पर वे खरा उतरेंगे और पार्टी संगठन की मजबूती व अधिक से अधिक युवाओं को पार्टी से जोड़ने का काम किया जाएगा। इस नियुक्ति के लिए प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सुशील कुमार गुप्ता, लोकसभा अध्यक्ष रामनाथ धुवारिया व जिला अध्यक्ष का विशेष तौर पर आभार जताया।

मंत्री ने धांसू में गोशालाओं को 84 लाख से अधिक के चेक वितरित किए

सरकार गोवंश संरक्षण एवं संवर्धन के लिए प्रतिबद्ध : रणबीर गंगवा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार। गोशाला संचालकों को अनुदान राशि के चेक वितरित करते कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा। फोटो :हरिभूमि

लोक निर्माण एवं जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री रणबीर गंगवा ने गांव धांसू में आयोजित कार्यक्रम में विभिन्न गौशालाओं को अनुदान राशि के चेक वितरित किए। इस अवसर पर उन्होंने धांसू गोशाला में लगभग 17 लाख रुपये की लागत के शेड का लोकार्पण भी किया।

कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा ने कहा कि हरियाणा सरकार गौवंश संरक्षण एवं संवर्धन के लिए निरंतर प्रयासरत है। सरकार की गौवंश संरक्षण एवं संवर्धन नीति के तहत गौशालाओं को आर्थिक सहायता प्रदान कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने पर विशेष जोर दिया जा रहा है। आज गौशालाओं को 84 लाख 41 हज़ार 560 रुपए की राशि दी गई है। श्री गोरक्षा सेवा समिति, अग्रोहा रोड, बरवाला को 11 लाख 88 हजार 640 रुपए, श्री लाडवा गोशाला को 11 लाख 96 हजार, श्री गोपाल गोशाला, टोहाना रोड, बरवाला को 14 लाख 60 हज़ार 960, श्री शिव गोशाला समिति, नियाना को 14 लाख 02 हज़ार 540, राधा कृष्ण गोशाला, धांसू को 12 लाख 37 हज़ार 400, श्री शालिग्राम गोधाम, तलवंडी राणा को 8 लाख 50 हज़ार 080, उमा मनोहर गोसेवा सदन, तलवंडी राणा को 2 लाख 16 हज़ार 200 तथा बाबा मोतीनाथ गौशाला, जुगलान को 10 लाख 89 हज़ार 740 रुपए की राशि के चेक वितरित किए गए। इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री ने ग्राम पंचायत की ओर से रखी गई मांगो को जल्द पूरा करवाने का आश्वासन दिया। उन्होंने बताया कि ढाणियों की लाइट के लिए जो एस्टीमेट उन्हें दिए गए थे, उनके पैसे भिजवा दिए गए हैं। आगे भी यदि किसी ढाणी की लाइट का एस्टीमेट मिला, तो उसको भी जल्द से जल्द पूरा करवाया जाएगा।

इस अवसर पर जिला परिषद अध्यक्ष सोनू सिहाग डाटा, पार्षद ओपी मालिया, पूर्व चेयरमैन रणधीर धीरू, अभिषेक शर्मा, अजय कांत जांगड़ा, वेदप्रकाश बेनीवाल, सरपंच सुरजीत, बनवारी लाल, प्रेम जयाणी, वेदप्रकाश, राजपाल, विनोद, राम भगत, धर्मवीर सहित गांव के गणमान्य नागरिक, आसपास की गोशालाओं के प्रतिनिधि व बड़ी संख्या में गोभक्त उपस्थित थे।

हिसार। ढाणी मोहब्बतपुर में खाल का उद्घाटन करते पूर्व विधायक भव्य बिश्नोई। फोटो :हरिभूमि

गो संवर्धन के प्रयास कर रही सरकार : भव्य बिश्नोई

हिसार। भाजपा युवा मोर्चा के प्रदेश प्रभारी एवं पूर्व विधायक भव्य बिश्नोई ने कहा है कि सरकार की ओर से दी जा रही आर्थिक सहायता गोशालाओं के संचालन, गायों के संरक्षण और उनकी बेहतर देखभाल के लिए महत्वपूर्ण साबित होगी। उन्होंने गाय को भारतीय संस्कृति और समाज की पहचान बताते हुए कहा कि गौ सेवा न केवल धार्मिक आस्था का विषय है, बल्कि यह हमारी परंपराओं और मूल्यों को सहेजने का भी एक माध्यम है।

भव्य बिश्नोई शनिवार को आदमपुर विधानसभा क्षेत्र में आयोजित विभिन्न सामाजिक एवं विकासात्मक कार्यक्रमों में ग्रामीणों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने बालसमंद में आयोजित एक कार्यक्रम में भाग लेते हुए बालसमंद, डोभी, मोहब्बतपुर, काबरेल, मंडी आदमपुर, सदलपुर, कोहली, खासा महाजन, फ्रांसी और जगाण स्थित गोशालाओं के प्रतिनिधियों को करोड़ों रुपये के चेक वितरित किए। इसके अलावा उन्होंने क्षेत्र के कई गांवों में जाकर जनसमस्याओं को सुना और चल रहे विकास कार्यों का निरीक्षण भी किया। भव्य बिश्नोई ने ढाणी मोहब्बतपुर में एक खाल (पानी की नहर) का उद्घाटन भी किया। भव्य बिश्नोई ने आदमपुर विधानसभा क्षेत्र में चल रहे अन्य विकास कार्यों का भी जायजा लिया और संबंधित अधिकारियों से प्रगति रिपोर्ट प्राप्त की।

आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस अंग्रेजी पाठ में छाईं छात्राएं

हांसी। कविता पाठ प्रतियोगिता में भाग लेती छात्रा। फोटो :हरिभूमि

- अंग्रेजी कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हांसी

आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस में शनिवार को विद्यार्थियों की साहित्यिक प्रतिभा को निखारने के उद्देश्य से हिंदी एवं अंग्रेजी कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का आयोजन विद्यालय स्तर पर प्रिंसिपल नीतीश मिश्र एवं वाइस प्रिंसिपल गीता यादव की देखरेख में किया गया। कार्यक्रम का संचालन अंग्रेज़ी अध्यापिका मुस्कान और हिंदी अध्यापिका ममता द्वारा किया गया। प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने विभिन्न विषयों पर कविताएं प्रस्तुत करते हुए अपनी भाषा दक्षता, उच्चारण एवं अभिव्यक्ति कौशल का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में विद्यालय के हिंदी व अंग्रेजी विभाग के सभी अध्यापकों का सराहनीय योगदान रहा। विशेष रूप से अध्यापिका रेनू, योगिता एवं पूजा का सहयोग उल्लेखनीय रहा, जिनकी सक्रिय भागीदारी से कार्यक्रम सुव्यवस्थित ढंग से संपन्न हो सका।

निर्णायक मंडल ने प्रतिभागियों का मूल्यांकन उच्चारण, भाव-प्रदर्शन, आत्मविश्वास एवं मंच संचालन के आधार पर विजेताओं का चयन किया। प्रतियोगिता के अंत में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।

विद्यालय के प्रिंसिपल नीतीश मिश्र ने कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताओं के आयोजन से विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि होती है तथा उनके अंदर छिपी प्रतिभाओं को मंच मिलता है। उन्होंने प्रतियोगिता के विजेता विद्यार्थियों को प्रशस्ति पत्र व स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया।

शिक्षा, खेल, सांस्कृतिक गतिविधियों को लेकर शिक्षकों ने रखे अपने सुझाव

- श्रवण एवं वाणी निशक्त जन कल्याण केंद्र में आजीवन सदस्यों की बैठक

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार। वाटर कूलर का शुभारंभ करते नन्हीं बालिकाएं व उपस्थित पदाधिकारी।

शहर के श्रवण एवं वाणी निशक्त जन कल्याण केंद्र में विद्यालय के आजीवन सदस्यों की बैठक हुई। बैठक में नए शैक्षणिक सत्र के मद्देनज़र विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को लेकर गहन मंथन किया गया। बैठक में उपस्थित सदस्यों ने शिक्षा, खेल, सांस्कृतिक गतिविधियों तथा नैतिक मूल्यों के समन्वय के साथ बच्चों के चहुंमुखी विकास के लिए अपने महत्वपूर्ण सुझाव साझा किए। बैठक के दौरान एक अत्यंत भावुक एवं प्रेरक क्षण तब देखने को मिला, जब आजीवन सदस्य के सहयोग से विद्यालय में स्थापित वाटर कूलर का उद्घाटन स्वयं श्रवण एवं वाणी निशक्त नन्हीं बालिकाओं से कराया गया। बैठक में आजीवन सदस्य सत्यपाल अग्रवाल ने कहा कि ऐसे संगठित प्रयासों से न केवल विद्यार्थियों को बेहतर सुविधाएं मिलेंगी, बल्कि उनके आत्मविश्वास और भविष्य को भी एक नई दिशा प्राप्त होगी। सहायक निदेशक अमित चौधरी ने सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर सौरभ सहरावत, ताराचंद, सत्यपाल अग्रवाल, ललित कुमार, हरिओम कौशिक, अशोक शर्मा, आरपी पाल, दीप, शेखर, रेणु, रंजीता सहित समस्त स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे और बैठक में सभी आजीवन सदस्यों ने एक स्वर में संस्था के निरंतर विकास का संकल्प दोहराया।

ओएसजीयू में इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस का आगाज

- अफगानिस्तान व सिंगापुर से जुड़े विशेषज्ञ ने साझा किए विचार

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार। कॉन्फ्रेंस में उपस्थित दोनों विश्वविद्यालय के अधिकारी। फोटो : हरिभूमि

ओम स्टर्लिंग ग्लोबल विश्वविद्यालय तथा बख्तर विश्वविद्यालय अफगानिस्तान, के सयुक्त तत्वावधान में सहयोगात्मक अनुसंधान के माध्यम से समावेशी विकास और सतत विकासः विकसित भारत @2047 विषय पर दो दिवसीय ऑफलाइन व ऑनलाइन इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस का आग़ाज हुआ। इस मौके पर विश्वविद्यालय के चांसलर डॉ पुनीत गोयल और प्रो चांसलर डॉ पूनम गोयल ने सभी को अपनी शुभकामनाएं दी तथा कॉन्फ्रेंस में शोध पत्र प्रस्तुत करने वाले प्रतिभागियों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय का उद्देश्य केवल किताबी ज्ञान देना नहीं बल्कि नवाचार और शोध को बढ़ावा देना भी है।

कॉन्फ्रेंस के प्रथम दिन ऑनलाइन माध्यम से प्रोफेसर प्रशांत जमवाल (निदेशक, चिकित्सा रोबोटिक्स एवं अनुसंधान उत्कृष्टता केंद्र, नज़रबायेव विश्वविद्यालय, कजाकिस्तान) ने मुख्य अतिथि के रूप में एवं डॉ परीक्षित यादव (सिंगापुर) ने मुख्य वक्ता के रूप में शिरकत कि एवं शोधार्थियों को प्रेरित किया। कार्यक्रम के दौरान ग्रुप सीओओ एंड प्रोवोस्ट डॉ अजय पोद्दार एवं कुलपति डॉ एन पी कौशिक ने सभी का स्वागत करते हुए प्रसन्नता व्यक्त की। इसी कड़ी में बख्तर विश्वविद्यालय (अफगानिस्तान) के कुलपति प्रो. सैयद हबीबुल्लाह बेहज़ाद भी ऑनलाइन माध्यम से जुड़े एवं दोनों विश्वविद्यालयों और शोधार्थियों को बधाई दी।

शोधपत्र प्रस्तुत किए

इस कॉन्फ्रेंस को स्कूल ऑफ कॉमर्स एंड मैनेजमेंट, स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, स्कूल ऑफ हॉस्पिटैलिटी मैनेजमेंट और स्कूल ऑफ लीगल स्ट्डीज ने संयुक्त रूप से आयोजित की। देश व विदेश के 58 शोधार्थियों ने कॉन्फ्रेंस के पहले दिन ऑनलाइन माध्यम से शोध पत्र प्रस्तुत किए। कॉन्फ्रेंस संचालक डॉ कुलदीप सिंह, डीन कॉर्मस एवं मैनेजमेंट विभाग, ने कॉन्फ्रेंस में शामिल होने पर सभी का आभार व्यक्त किया।

हिसार। भाग्यश्री महिला आश्रम में योग शिविर में हिस्सा लेतीं महिलाएं।

भाग्यश्री महिला आश्रम में योग शिविर का समापन

हिसार। आजाद नगर स्थित भाग्यश्री महिला आश्रम में सात दिवसीय योग व ध्यान शिविर का आयोजन किया गया। आश्रम में रह रही मानसिक पीड़ित 70 महिलाओं को हर दिन सूक्ष्म व्यायाम और ध्यान का अभ्यास करवाया गया। ध्यान और योग के साथ-साथ मनोरंजन वाली अनेक गतिविधियां भी करवाई गई जिसमें फुटबॉल के साथ खेलना, चित्रकारी, हिंदी अंग्रेजी की कक्षाएं, नाचना-गाना, प्राथमिक शिक्षा का अभ्यास आदि करवाया गया। इस 7 दिन के कार्यक्रम का उद्देश्य आश्रम की मानसिक पीड़ित महिलाओं की हर तरह की क्षमता को निखारना था जिसमें उनमें आत्मविश्वास और एक सकारात्मक ऊर्जा का संचार किया जा सके। इस मौके पर पूर्व चेयरमैन सतबीर वर्मा, आश्रम की मुख्य भूमिका प्रिंसिपल कुलदीप सिंह, राजविंद्र कौर, सचिव बलवान सिंह, आश्रम संचालिका बाला वर्मा, मंजूबाला, विक्रम लौरा, सुमन गुप्ता, रतन सिंह दहिया, पूर्व पार्षद पिंकी शर्मा आदि मौजूद रहे।

हर्षिका ने मलेरिया पर भाषण देकर किया प्रभावित

- एसडी मॉडर्न पब्लिक स्कूल में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हांसी

हांसी। विश्व मलेरिया दिवस पर आयोजित जागरूकता कार्यक्रम में भाग लेते विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

एसडी मॉडर्न पब्लिक स्कूल में विश्व मलेरिया दिवस' के अवसर पर शनिवार को गार्गी सदन द्वारा एक विशेष प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मार्गदर्शन गार्गी सदन की प्रभारी रेनू बजाज ने किया। विशेष प्रार्थना सभा का उद्देश्य मलेरिया रोग, इसके कारण, लक्षण एवं बचाव के उपाय के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता फैलाना था। वर्ष 2026 की थीम मलेरिया का अंत- हमारे साथ पुनः निवेश, पुनः कल्पना, पुनः जोश पर विशेष जोर दिया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रार्थना से हुआ इसके पश्चात कक्षा ग्यारहवीं की छात्रा हर्षिका ने मलेरिया पर सारगर्भित भाषण में बताया कि मलेरिया से बचाव हेतु साफ सफाई का ध्यान रखना, पानी जमा न होने देने, मच्छरदानी का प्रयोग व पूरे कपड़े पहनने के महत्व पर प्रकाश डाला। इसके साथ ही पांचवी कक्षा के विद्यार्थी रूद्र ने कविता प्रस्तुत की कक्षा ग्यारहवीं की छात्रा प्रेक्षा द्वारा सभी विद्यार्थियों व शिक्षकों को मलेरिया विरोधी शपथ दिलाई गई। स्कूल प्राचार्या ऋतु सिंह ने बच्चों के प्रयासों की सराहना करते हुए सभी से मलेरिया से बचाव के उपाय अपनाने की अपील की।

बरवाला। बैठक में उपस्थित किसान सभा के पदाधिकारी व अन्य।

किसानों की कन्वेंशन 27 को हिसार में होगी

बरवाला। अखिल भारतीय किसान सभा बरवाला उकलाना तहसील कमेटी की संयुक्त बैठक किसान रेस्ट हाउस बरवाला में प्रधान मा. फूल सिंह व सत्यवान रेढू की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक का संचालन सचिव प्रदीप बूरा ने किया। सभा पदाधिकारियों ने कहा कि किसानों से जुड़े मुद्दों को लेकर अखिल भारतीय किसान सभा की राज्य स्तरीय कन्वेंशन 27 अप्रैल को जाट धर्मशाला हिसार में की जाएगी। कन्वेंशन में आगामी आंदोलन की घोषणा की जाएगी। इस बैठक में जिला सचिव सरबत सिंह पूनिया के अलावा तहसील कमेटी नेता रोहतास राजली, ओमप्रकाश खान बहादुर, श्रवण कुमार ढाणी गारण, मा. बलराज सिंह, सतबीर बलोदा, जोगिंदर सिंह, भजनलाल, मोहनलाल राजली, भीरा श्योराण दौलतपुर व मनबीर मलिक आदि उपस्थित रहे। इस बैठक में विशेष रूप से उपस्थित हुए अखिल भारतीय किसान सभा के जिला सचिव व राज्य कमेटी नेता सरबत सिंह पूनिया ने कहा कि गत साल अत्यधिक बारिश और प्रशासनिक और सरकार की लापरवाही के चलते हरियाणा के कई जिले बाढ़ ग्रस्त हो गए थे।

ज़ु-जुत्सु चैम्पियनशिप में तनुज ने जीता रजत

तनुज बैनीवाल

हिसार। आजाद नगर निवासी तनुज बैनीवाल ने ऑल इंडिया इंटर यूनिवर्सिटी ज़ु-जुत्सु चैम्पियनशिप में रजत पदक अर्जित किया है। उसने यह पदक -69 किलोग्राम भारवर्ग में जीता है। ज़ु-जुत्सु एसोसिएशन हिसार के महासचिव सचिन वर्मा ने यह जानकारी देते हुए आज बताया कि यह चैम्पियनशिप लक्ष्मी नारायण कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी (एलएनसीटी) यूनिवर्सिटी, भोपाल में संपन्न हुई है। तनुज ने इस प्रतियोगिता में एलएनसीटी यूनिवर्सिटी भोपाल का प्रतिनिधित्व किया था। तनुज का फाइनल मुकाबला कुमाऊं यूनिवर्सिटी नैनीताल के प्लेयर्स से हुआ था जिसमें उसे 5-3 से हार का सामना करना पड़ा और रजत पदक मिला। सचिन वर्मा ने तनुज बेनीवाल को अच्छा प्रदर्शन करने के लिए बधाई दी और बताया कि तनुज राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित अनेक प्रतियोगिताओं में पहले भी कई बार पदक जीत चुका हैं।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, 783, पी.एल.ए., नजदीक टाउन पार्क, हिसार
फोन : 7988727916, 9315429403, 9253681005

दो दर्जन से अधिक संस्थाओं ने विधायक सावित्री जिंदल को पुनः ज्ञापन सौंपा

पुरुषोत्तम एक्सप्रेस का हिसार तक विस्तार कराने की मांग तेज

जनहित की इस मांग को पुनः रेल मंत्री के पास भेजा जाएगा : सावित्री

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हिसार। विधायक सावित्री जिंदल को ज्ञापन सौंपते विभिन्न संस्थाओं के लोग।

नगर की दो दर्जन से अधिक सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं से जुड़े अनेक गणमान्य लोगों ने विधायक सावित्री जिंदल से उनके निवास पर मुलाकात कर पुनः ज्ञापन सौंपते हुए रेलगाड़ी संख्या 12801/12802 पुरुषोत्तम एक्सप्रेस का हिसार तक विस्तार करवाने का अनुरोध करते हुए उनसे तुरंत आवश्यक कदम उठाने की मांग की है। विधायक के साथ समाजसेवी जगदीश जिंदल, पार्षद संजय डालमिया, जगमोहन मित्तल, पूर्व पार्षद सुशील शर्मा आदि भी उपस्थित रहे। ज्ञापन देने वालों ने विधायक को बताया कि इस गाड़ी के हिसार तक चलने से रोजाना हजारों यात्रियों को लाभ होगा तथा सरकार को अतिरिक्त राजस्व की प्राप्ति होगी। ज्ञापन में कहा गया है कि वर्तमान में उक्त गाड़ी जगन्नाथ पुरी से आनंद विहार टर्मिनल तक संचालित होती है, जहां यह गाड़ी प्रातः 3:50 बजे पहुंचती है तथा अगले दिन रात्रि 22:45 बजे पुनः प्रस्थान करती है। इस प्रकार लगभग 19 घंटे तक गाड़ी वहां रुकती है। प्रतिदिन हजारों यात्रियों की सुविधा के लिए इस गाड़ी का आसानी से हिसार तक विस्तार किया जा सकता है। विधायक सावित्री जिंदल ने ज्ञापन लेते हुए कहा कि पहले भी इस मांग को रेल विभाग तक भेज दिया गया था। अब पुनः रेलगाड़ी चलवाने सम्बंधी जनहित की मांग को रेल मंत्री व रेल विभाग के पास भेजकर पुरजोर सिफारिश की जाएगी।

ज्ञापन देने वालों में ये रहे मौजूद

ज्ञापन देने वालों में पूर्वांचल जन कल्याण संगठन समिति, श्रीरामलीला कमेटी कटला, हरियाणा भारत विकास फाऊंडेशन (भारत विकास परिषद विवेकानंद शाखा), सेवा भारती हरियाणा प्रदेश, केंद्रीय विद्यालय पेरेंटस ग्रुप सोसायटी, समस्त वाल्मीकि समाज संगठन, समस्त समाज एकता ग्रुप, वनवासी कल्याण आश्रम, स्वामी विवेकानंद स्मारक समिति, अधिवक्ता परिषद हरियाणा शाखा हिसार, पंजाबी वैलफैसर सोसायटी, रेजिडेंटस वैलफेयर सोसायटी सेक्टर 33 पार्ट-1 हिसार, अखिल भारतीय वैकुंठनाथ सेवा धर्मार्थ ट्रस्ट वृंदावन, भगवान परशुराम जन सेवा समिति, मनोहर सेवा समिति मोर्चा, अग्रोहा धाम संस्थान, हरियाणा व्यापार मंडल, बिश्नोई सभा हिसार, दिगम्बर जैन मंदिर सहित कई अन्य संस्थाओं से जुड़े विनोद साहनी, मोहन कौशिक, आचार्य सुरेश प्रसाद मिश्र, विनोद गुप्ता, ललित गोयल, अवधेश प्रसाद, अनिल उपाध्याय, मनीश शर्मा, हरीश भुटानी, खुशीराम गोयल, सुदर्शन सोनी, लालचंद शर्मा, राजकुमार जैन, दिनेश बिंदल, विनित गोयल, दलीप वाल्मीकि, संजय वाल्मीकि, दीपक लोट, रुस्तम, दीपक, राजेश लोट, अशोक शर्मा सहित अनेक लोग उपस्थित रहे।

हरिभूमि रविवार भारती

haribhoomi.com

छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित

रोहतक, रविवार 26 अप्रैल 2026

विशेषः अंतरराष्ट्रीय नृत्य दिवस 29 अप्रैल

{ आवरण कथा / प्रस्तुतिः रेणु खंतवाल }

नृत्य ऐसी कला है, जो जीवन को उमंगित कर देती है। जिनके जीवन में नृत्य शामिल होता है, वे हर पल संतुलित, आनंदित महसूस करते हैं। नृत्य दिवस के अवसर पर यहां अलग-अलग शैली के नर्तक और नृत्यांगनाएं बता रहे हैं नृत्य का उनके जीवन में क्या महत्व है? यानी, नृत्य ने उनके जीवन को किस-किस स्तर पर बदला, उसे अलग दिशा प्रदान की? जब नृत्य के दौरान वे उसमें पूरी तरह खो जाते हैं तो उस समय किस तरह की अनुभूति होती है? और शारीरिक-मानसिक सेहत बेहतर करने में नृत्य की भूमिका को कितना महत्वपूर्ण मानते हैं?

जीवन की सरगम पर तन-मन की थिरकन

नृत्य से जीवन में निखार आता है

कविता द्विवेदी, ओडिसी नृत्यांगना

नृत्य मेरे लिए जीवन है और मेरे जीवन में नृत्य है। मैं ऐसा महसूस करती हूं कि अगर मेरे जीवन में नृत्य नहीं होता तो मेरे जीवन का कोई अस्तित्व भी नहीं होता। नृत्य ने समय-समय पर मेरे जीवन को बदला, स्थापित किया। मुझे अलग-अलग स्तर पर पहचान दी, आगे बढ़ाया। इसी की वजह से मुझे कॉलेज में स्कॉलरशिप मिली और देश दुनिया में अपनी कला दिखाने का अवसर मिला। मैं दृढ़ विश्वास से आगे बढ़ पाई। सन 2013 में मुझे ओडिसा संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार मिला। इस पुरस्कार का भी मेरे जीवन में बहुत महत्व रहा है। नृत्य के माध्यम से मैंने खुद को खोजा, समझा कि मुझमें क्या अच्छाई है, क्या कमी? जब भी मैं नृत्य करती हूं, उसमें खो जाती हूं। उसके बाद मैं नृत्य के शिखर बिंदु पर पहुंच जाती हूं। वहां तो मुझे अपनी कोई सुधबुध नहीं रहती। पूर्ण समर्पण के साथ मैं नृत्य में डूबी होती हूं। उस दौरान एक दिव्य शक्ति को महसूस करती हूं। जब मैं अपनी प्रस्तुति पूरी करती हूं, उसके बाद मुझसे कुछ बोला ही नहीं जाता, मैं चुप हो जाती हूं। कभी महसूस करती हूं कि अब मुझे एकांत चाहिए। जिस शक्ति के साथ मैं नृत्य कर रही थी, उसी शक्ति के साथ मैं कुछ वक्त बिताऊं। नृत्य से मुझे शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक ऊर्जा मिलती है। हर व्यक्ति को अपनी दिनचर्या में नृत्य को शामिल करना चाहिए। नृत्य से जीवन में निखार आता है। नृत्य के माध्यम से आप समाज में अलग पहचान, महत्व बनाते हैं। बहुत त्याग और तपस्या से मैंने नृत्य के माध्यम से देश-दुनिया में एक अलग पहचान बनाई है। *

तन-मन-जीवन के लिए जरूरी है नृत्य

श्रुति सिन्हा, कथक नृत्यांगना

नृत्य मेरे जीवन का महत्वपूर्ण, बहुआयामी हिस्सा है। नृत्य ने मुझे जीने का सकारात्मक नजरिया दिया। मेरा शरीर, मन और आत्मा पूरे तरीके से नृत्य में डूबे रहते हैं। मैं नृत्य के जरिए खुद को बहुत मजबूत महसूस करती हूं। जीवन में जितने भी उतार-चढ़ाव आते हैं, उससे उबरने में नृत्य मेरी बहुत सहायता करता है। व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और पेशेवर स्तर पर नृत्य का मुझ पर बहुत प्रभाव रहा। आज नृत्य के कारण ही सामाजिक स्तर पर मुझे इतना मान-सम्मान मिलता है। नृत्यांगना, नृत्य शिक्षिका और कोरियोग्राफर के रूप में मेरी पहचान है। नृत्य ने ही मुझे सकारात्मक, ऊर्जावान बनाया। आत्म खोज व अनुशासन के साथ लक्ष्य की ओर बढ़ना सिखाया। रचनात्मक नई सोच और कल्पनाशक्ति प्रदान की। इस तरह नृत्य ने मुझे जीवन में बहुत कुछ दिया है। कई बार नृत्य करते हुए मैं जब उसमें पूरी तरह खो जाती हूं, उस समय जो अनुभूति होती है उसे शब्दों में बताना मुश्किल है। उस अनुभूति को सिर्फ महसूस किया जा सकता है। उस समय मैं सिर्फ अपने आप में लीन होकर नृत्य में डूबी होती हूं। शायद इसे ही नृत्य के जरिए मनुष्यत्व का देवत्व तक पहुंचना कहते हैं। नृत्य बहुत अच्छा व्यायाम भी है, जिससे शरीर लचीला, मजबूत और ऊर्जावान बनता है। नृत्य आत्मविश्वास बढ़ाता है, तनाव, चिंता व अवसाद कम करता है। नृत्य, संगीत और ताल के साथ जुड़कर मन को खुशी व शांति देता है। मन को संतुलित करने के साथ-साथ पूरे व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाता है। इस तरह नृत्य शारीरिक और मानसिक सेहत दोनों के लिए बहुत लाभकारी होता है। मेरा मानना है कि नृत्य को अपने डेली रूटीन में शामिल करने से सकारात्मक सोच बढ़ती है। आलस नहीं रहता। शरीर बीमारियों से दूर रहता है। अतः हम किसी भी उम्र के हों, नृत्य जरूर करना चाहिए। *

नृत्य मेरी अभिव्यक्ति का माध्यम है

बीके अतुल गोस्वामी, कंटेंपरेरी डांसर-कोरियोग्राफर

मेरे लिए नृत्य केवल एक कला नहीं बल्कि मेरी पहचान है। नृत्य ने मेरे शरीर को शक्ति, मन को शांति और मेरी आत्मा को मुझसे जोड़ा है। जहां शब्द रुक जाते हैं, वहां से मेरा नृत्य शुरू होता है यानी नृत्य मेरी अभिव्यक्ति का माध्यम है। जब मैं नृत्य करता हूं और पीक पर पहुंच जाता हूं, उस समय मुझे यह महसूस होता है कि मैं डांस नहीं कर रहा हूं बल्कि मेरी आत्मा मेरे शरीर से डांस करवा रही है। उसके बाद हर बीट दिल की धड़कन बन जाती है और दुनिया कुछ पलों के लिए ठहर सी जाती है। डांस करते हुए मैं इस पीक को हमेशा महसूस करता हूं क्योंकि उन पलों में मैं खो जाता हूं। नृत्य केवल शरीर की ही नहीं बल्कि मन की थेरेपी भी होती है। नृत्य वो ताकत है, जो तनाव को भी ऊर्जा में बदल देता है। जैसे ही आप डांस करना शुरू करते हैं, शरीर में जितनी भी नकारात्मकता है, वह अपने आप रिलीज होने लगती है और आप बहुत हल्का महसूस करते हैं। अगर आप रूटीन में अपनी पसंद का कोई भी डांस शामिल करें तो यह आपको फ्रीडम का एहसास कराएगा। डांस के हर बीट पर आप अपने तनाव को कम करते जाते हैं। यह आपको शारीरिक रूप से तो फिट रखता ही है, साथ ही सोच व विचारों को सकारात्मक भी बनाता है। जब भी मैं तनाव महसूस करता हूं तो डांस करके खुद को हल्का और खुश महसूस करता हूं। इसलिए मैं तो यही सबसे कहता हूं कि हर इंसान को डांस जरूर करना चाहिए। *

नृत्य अध्यात्म से जोड़ता है और ईश्वर के करीब ले जाता है

ऐश्वर्य हरीश, भरतनाट्यम नृत्यांगना

मेरे लिए नृत्य केवल जीवन का हिस्सा नहीं है बल्कि मेरा जीवन ही है। मैं अपने परिवार की पांचवीं पीढ़ी से हूं, जो नृत्य कला से जुड़ी है। नृत्य मेरे खून में रचा-बसा है। बचपन से मैं देखती आ रही हूं कि यह मेरे साथ इस तरह जुड़ गया कि कभी लगा ही नहीं कि मैं कुछ अलग काम कर रही हूं। नृत्य ने मुझे अनुशासन और धैर्य सिखाया। खुद को समझना सिखाया। जैसे-जैसे मैं नृत्य करती गई यह मेरे लिए केवल नृत्य नहीं रहा बल्कि साधना बन गया। नृत्य हमें अपनी जड़ों से जोड़ता है। नृत्य अध्यात्म से जोड़ता है और ईश्वर के और करीब ले जाता है। कई बार लगता है कि जो मैं शब्दों में नहीं कह पाती, वह नृत्य अपने आप कह देता है। नृत्य में जो पीक स्टेज होती है, उसे शब्दों में कह पाना मुश्किल है। क्योंकि उस समय आप नृत्य कर नहीं रहे होते बल्कि नृत्य बन जाते हो। एक अलग ही स्थिति होती है, जहां अहंकार धीरे-धीरे मिट जाता है। उस समय न तो समय का, न दर्शकों का और न ही मंच का बोध रहता है। बस लय भाव और एक प्रवाह रह जाता है। कभी लगता है कि बाहर और भीतर का भेद ही मिट गया है और जो कुछ भी हो रहा है, वह अपने आप हो रहा है और आप उसका आनंद ले रहे होते हैं। अगर आप कृष्ण और यशोदा का संवाद दिखा रहे हैं तो आप ही कृष्ण, आप ही यशोदा हो जाते हैं। यह बहुत गहरा आनंद होता है। यह वह पल होता है, जहां कला साधना और अध्यात्म, तीनों एक हो जाते हैं। नृत्य शरीर का संतुलन अभ्यास भी है। इससे स्ट्रेंथ और स्टेमिना बढ़ता है। नृत्य की मुद्राएं शरीर में एक संतुलन उत्पन्न करती हैं और धीरे-धीरे यही संतुलन आपके जीवन जीने के तरीके और व्यवहार में भी आता है। जब आप नियमित रूप से नृत्य करते हैं तो एकाग्रता अपने आप बढ़ने लगती है। मन स्थिर हो जाता है। जीवन में तनाव भी कम होने लगता है। मेरा मानना है कि कला इंसान को सकारात्मक बनाती है। जब आप संगीत के साथ थोड़ी देर लय ताल में थिरकते हैं तो आपकी ऊर्जा अपने आप बदलने लगती है। *

मोबाइल स्क्रीन पर सिमटता सिनेमा

माइक्रो-सीरीज का चढ़ता सूरज!

{ न्यू ट्रेंड / गौरव द्विवेदी }

फिल्म, टीवी सीरियल, वेब-सीरीज और शॉर्ट फिल्म्स के बाद अब माइक्रो-सीरीज का ट्रेंड तेजी से पॉपुलर हो रहा है। इसके पॉपुलर होने की क्या वजहें हैं। यह किस तरह से एंटरटेनमेंट स्टाइल को पूरी तरह बदल रहा है, इस पर एक नजर।

भारत में मनोरंजन की दुनिया एक दिलचस्प मोड़ पर है। सिनेमा अब बड़े पर्दे से निकलकर मोबाइल स्क्रीन में सिमट रहा है। इस बदलाव का सबसे बड़ा चेहरा है माइक्रो-सीरीज और वर्टिकल वीडियो। यह केवल एक ट्रेंड नहीं, बल्कि एक वैश्विक बदलाव है। अनुमान है कि 2025 तक दुनिया के कुल इंटरनेट ट्रैफिक का लगभग 82% वीडियो कंटेंट का रहा, जिसमें शॉर्ट, वर्टिकल वीडियो का दबदबा सबसे ज्यादा था।

बढ़ रहा शॉर्ट वीडियो मार्केटः इंस्टाग्राम और यू-ट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म्स ने देखने की आदत को पूरी तरह बदल दिया है। अब दर्शक 'देखता' नहीं, बल्कि 'स्क्रॉल' करता है, और हर स्क्रॉल में कहानी फिट होनी चाहिए। भारत में इस बदलाव की गति और भी तेज है। एक रिपोर्ट के अनुसार, देश में 100 मिलियन (10 करोड़) से अधिक दर्शक पहले ही माइक्रो-ड्रामा कंटेंट देख रहे हैं। यानी यह अब मनोरंजन की मुख्यधारा बन चुका है। वैश्विक स्तर पर शॉर्ट वीडियो मार्केट का आकार 2026 में लगभग 59 अरब डॉलर आंका जा रहा है, जो 2033 तक बढ़कर 118 अरब डॉलर से ज्यादा का हो सकता है। सिर्फ वर्टिकल वीडियो सेगमेंट ही 2025 में लगभग 67% हिस्सेदारी तक पहुंच चुका है, जो इस फॉर्मेट की ताकत को दर्शाता है।

घरेलू प्लेटफॉर्म्स की बड़ी भूमिकाः भारत में इस उभार के पीछे घरेलू प्लेटफॉर्म्स की बड़ी भूमिका है। 'कुकु टीवी' जैसे प्लेटफॉर्म ने वर्टिकल माइक्रो-ड्रामा को एक नई पहचान दी है। इसके 1.2 करोड़ (12.7 मिलियन) से अधिक डाउनलोड्स हो चुके हैं, जबकि इसके ऑडियो प्लेटफॉर्म 'कुकु एफएम' ने 1 करोड़ से अधिक पेड सब्सक्राइबर्स का आंकड़ा पार कर लिया है। इसी तरह 'मोज' और 'जोश' जैसे भारतीय शॉर्ट वीडियो प्लेटफॉर्म्स ने मिलकर 300 मिलियन (30 करोड़) से अधिक यूजर इकोसिस्टम तैयार कर लिया है। नई श्रेणी के प्लेटफॉर्म जैसे 'क्विक टीवी', 'टुकटुकी', 'कटिंग' भी 2–5 मिनट के एपिसोड्स के साथ तेजी से उभर रहे हैं, और कुछ रिपोर्ट्स के अनुसार हाल के महीनों में ही 150 मिलियन व्यूअर्स ने माइक्रो-सीरीज कंटेंट देखा, जबकि रोजाना एपिसोड व्यूज 100 मिलियन तक पहुंच गए।

अन्य देशों में भी बढ़ रही पॉपुलैरिटीः चीन इस बदलाव का सबसे बड़ा उदाहरण है, जहां 'डुआंजू' (माइक्रो ड्रामा) इंडस्ट्री तेजी से एक समानांतर फिल्म उद्योग बन चुकी है। वहीं अमेरिका में भी 'ड्रामा बॉक्स' जैसे प्लेटफॉर्म्स करोड़ों यूजर्स के साथ पारंपरिक ओटीटी को चुनौती दे रहे हैं। इतना ही नहीं, यू-ट्यूब शॉर्ट्स पर रोजाना दो सौ अरब व्यूज तक का आंकड़ा सामने आता है, जो इस बदलाव की गति को दर्शाता है।

तेजी से बढ़ रहा ट्रेंडः भारत में यह ट्रेंड और तेजी से बढ़ रहा है। सस्ते डेटा, 5जी और स्मार्टफोन के प्रसार ने इसे जन-आंदोलन बना दिया है। टियर-2 और टियर-3 शहरों में युवा दर्शक अब माइक्रो-सीरीज को न केवल देख रहे हैं, बल्कि बना भी रहे हैं। आर्थिक दृष्टि से भी यह मॉडल बेहद आकर्षक है। जहां एक

पारंपरिक टीवी शो के एक एपिसोड पर करोड़ों रुपए खर्च होते हैं, वहीं एक वर्टिकल सीरीज का पूरा सीजन कुछ लाख में बन सकता है। हालांकि, इस तेजी के साथ कुछ खतरे भी हैं। जैसे-कहानियों की गहराई कम हो रही है और एल्गोरिदम यह तय कर रहा है कि क्या चलेगा? फिर भी, यह मानना होगा कि यह बदलाव अस्थायी नहीं है। यह भारतीय मनोरंजन उद्योग के नए ढांचे की नींव है। आने वाले समय में बड़ी फिल्में और वेब-सीरीज पहले माइक्रो-फॉर्मेट में अपनी लोकप्रियता साबित करेंगी। अब सिनेमा देखा नहीं जाता, स्क्रॉल किया जाता है। और जो स्क्रॉल में फिट हो जाए, वही नया सिनेमा है। *

(लेखक फिल्म पॉलिसी के जानकार हैं)

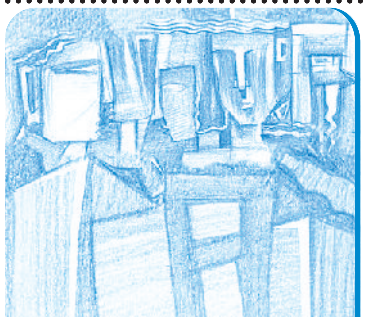

{ गीत / कृष्ण बिहारी }

सबकी अपनी सीमाएं हैं

कोई साथ कहां तक देगा
सबकी अपनी सीमाएं हैं,
हर कोई रीता-रीता है
कहने को सभी अघाए हैं।
अतृप्त जिंदगी छूंछी-सी
ऊपर से दिखती सजी-धजी
गर पास बुलाकर बैठा लो
तो लगती कितनी बुझी-बुझी
भ्रम के साए में सभी यहां
मुरदा पहचान बनाए हैं।
पेट काट जो तन ढंकती थी
वही भरे पेट अब नंगी है
नाच-नाचकर कहे सभ्यता
दुनिया यह रंग-बिरंगी है
रंग-रोगन से पुते हुए सब
भीतर-भीतर मुरझाए हैं।
जब देह में मन अनुपस्थित हो
औ' रूप जिए केवल पीड़ा
मेले में भी तनहाई हो
औ' प्राण हीन हो हर क्रीड़ा
तो बात समझनी क्या मुश्किल
अपनों से भेद छिपाए हैं।
कोई साथ कहां तक देगा
सबकी अपनी सीमाएं हैं।

{ व्यंग्य / सूर्य कुमार पांडेय }

शातिर अंतरात्मा गब्बर की

गब्बर की अंतरात्मा ने झकझोरते हुए कहा, 'तू स्वभाव से डकैत है, डकैत ही रहेगा। इसलिए स्थान-परिवर्तन कर ले और अपने कर्म-परिवर्तन को यथावत बना रहने दे। चल, सम्मानित जिंदगी जीने की राह पकड़ ले!'

'जब वही धंधा शहर में रह कर भी किया जा सकता है, तो बीहड़ में छिपकर क्यों रहा जाए?' एक रोज गब्बर की शातिर अंतरात्मा से आवाज आई, 'रे मूर्ख, परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। तू देखता ही होगा कि राजनेता आए दिन अपनी दलीय निष्ठाएं बदलते रहते हैं। बयानवीर अपने बयान बदल लेते हैं। सरकार में मंत्रियों के विभाग बदल जाते हैं। अधिकारियों और कर्मचारियों के तबादले होते रहते हैं। जिनका स्थानांतरण किया जाता है, वे जब दूसरी जगहों पर तैनाती पाते हैं तो क्या उनके गुण-धर्म बदल जाते हैं? भ्रष्टाचारी को कहीं भी भेज दो, वह भ्रष्टाचारी ही रहेगा। उसे सदाचारियों की भीड़ के बीच बैठा दो, तब भी वह स्वयं तो सुधरेगा नहीं, वहां के लोगों को अपने जैसा जरूर बना लेगा। यह काम तो तू भी कर सकता है। तू स्वभाव से डकैत है, डकैत ही रहेगा। इसलिए स्थान-परिवर्तन कर ले और अपने कर्म-परिवर्तन को यथावत बना रहने दे। चल, सम्मानित जिंदगी जीने की राह पकड़ ले!'

जब गब्बर की अंतरात्मा से यह आवाज बार-बार उठने लग गई, तब उसने एक शाम अपने गैंग के सदस्यों का एक पैनल बनाया और स्वयं एंकर की भूमिका में रहते हुए एक धुआंधार बहस की। एक बहसबाज दस्यु ने कहा, 'डकैती डालना घृणित कार्य है। अब हमें वैकल्पिक रोजगार की तलाश करनी चाहिए।' यह सुनकर दूसरे दुर्दांत बहसबाज ने घोर आपत्ति की, 'तुम बकवास कर रहे हो। डकैती तो हमारा पवित्र धर्म है। कोई हमारे धर्म को लेकर ऐसी बात कहेगा, तो मैं उसका सिर कलम कर दूंगा।' तीसरे बहसबाज डकैत ने कहा, 'अब डकैती के धंधे में पहले जैसी बरकत नहीं रही। मैं कल सरदार के आदेश पर एक गांव में गया था। वहां पर पहले हमारे जाते ही लोग अपने घरों से अनाज की बोरियां लाकर हमारे चरणों में धर दिया करते थे। इस बार मुझे पता चला कि सभी लोग खुद खाली थैले लेकर पांच किलो अनाज पाने के लिए सरकारी गल्ले की दुकानों पर गए हुए थे।' चौथे बहसबाज डाकू ने कहा, 'सरदार, अब आप ही बताइए, आपका निर्णय ही हमें दिशा दिखला सकता है।'

गब्बर ने बहस का समापन करते हुए कहा, 'मैंने तुम सबकी बातें ध्यानपूर्वक सुनी हैं और इस निर्णय पर पहुंचा हूं कि हमें अपना यह डकैती वाला धंधा छोड़ देना चाहिए और दूसरे वैकल्पिक रास्ते तलाशने चाहिए। हम इस घटाटोप जंगल में अड्डे बदलते-बदलते आजिज आ चुके हैं। ऊपर से हमेशा पुलिस का डर बना रहता है। साथ में मुखबिरी के खतरे तो हैं ही। क्या पता, अपने ही गैंग का कौन बंदा कब दगा दे जाए और हम सब एक दिन किसी एनकाउंटर में मार दिए जाएं! क्यों कालिया?' तब कालिया कहने लगा, 'सरदार, मैंने आपका नमक खाया है। घोर महंगाई में आपने हमें नीबू भी खिलाए हैं। आपकी कृपा बनी रहेगी तो हम आपके फार्म हाउस में बैठकर कल पिज्जा-बर्गर भी खाएंगे। वैसे भी यह कोई हमारा पुश्तैनी धंधा तो है नहीं कि इसे छोड़ देने में डकैतों की बिरादरी में हमारी नाक कट जाएगी। हम बीहड़ की जगह शहर में रहकर भी वहां के सम्मानित डकैतों जैसी शानदार जिंदगी जी सकते हैं।' उन सभी की बातें सुनकर गब्बर ने खैनी मलते हुए पूछा, 'अरे ओ सांभा, तू क्यों चुप है? तू भी तो बता कि हमें क्या करना चाहिए?' सांभा बोला, 'सरदार, आपने जो फैसला लिया है, वही सही है।'

इसके बाद उस इलाके में अपने बर्बर आतंक के चलते कुख्यात हो चुका गब्बर अब एक शरीफ डकैत बन चुका है। यूं भी कुख्यात और विख्यात होने में कोई खास अंतर नहीं होता है। मात्र जंगल और नगर का फर्क होता है। तो गब्बर और उसका गैंग अब सम्मानित डकैत बन चुके हैं। अब उस पर सरकारें इनाम नहीं घोषित करतीं हैं। अब वह खुद सरकारों को मदद-इमदाद करता है। अब पुलिस भी उसे ठोकने की फिराक में नहीं रहती, अलबत्ता वह उसे ही सलाम ठोंकती है। लेकिन कल गब्बर के साथ एक बुरी बात हो गई। उसके घर पर सीबीआई और ईडी का छापा पड़ गया। उसकी हवेली पर बुलडोजर चल गया। गब्बर अपने पूरे गैंग के साथ जेल में है और अपनी शातिर अंतरात्मा को तलाश रहा है। वह मिल जाए तो उसे गोली मार देगा। लेकिन गब्बर यह बात नहीं जानता है कि उसकी अंतरात्मा तो डकैती के धंधे में आते ही मर चुकी थी। यह उसका आंतरिक भय था, जिसको वह गलती से अपनी शातिर अंतरात्मा समझ बैठा था। *

{ पुस्तक चर्चा / कुलदीप सिंह भाटी }

ग्लैमर की दुनिया का किस्सा

कथा साहित्य में किस्सागोई का एक विशिष्ट स्थान रहा है। कारण इसका यह है कि किस्सागोई में बात से बात निकलती चली जाती है। इस तरह इसमें रोचकता के साथ ही साथ जिज्ञासा भी बनी रहती है। वरिष्ठ कथाकार और शायर हबीब कैफी का नया उपन्यास 'काला, धौला और रंगीन' इसी किस्सागोई शैली में लिखा गया एक उम्दा उपन्यास है। इस कथा की मुख्य पात्र पलक है। फिल्मी दुनिया की यह सफल अभिनेत्री, जब एक साहित्यकार के आगे खुलने लगती है तो प्रायः बंद ही रहने वाली यह स्त्री जिंदगी की कई परतें खोलती चली जाती है। पता चलता है कि एक नामी राजघराने से ताल्लुक रखने वाली यह अभिनेत्री अपने क्षेत्र, फिल्मी दुनिया के साथ ही साहित्य, कला और संगीत आदि से भी बड़ी हद तक लगाव और जुड़ाव रखती है। संवेदनशील अभिनेत्री पलक इस बीच सहज ही अपनी जिंदगी की परतें भी खोलती चली जाती है तो पता चलता है कि एक्स्ट्रा जूनियर आर्टिस्ट से नामी अभिनेता बने, समीर से यह गहरे प्रेम में है। मानवीय गुणों से संपन्न नैसर्गिक अभिनेता समीर मस्त मौला स्वभाव के कारण पलक के प्रेम का ठीक-ठीक जवाब नहीं दे पाता। समय अपनी गति से गुजरता जाता है और एक दिन अचानक ही समीर दुनिया छोड़ जाता है। उपन्यास के अंत में पाठक पलक की सच्ची और गहरी मोहब्बत महसूस करते हैं तो उनका दिल भी भर आता है।

लगभग अपठनीयता के इस दौर में यह उपन्यास न केवल स्वयं को पढ़वा ले जाता है, अपितु एक गहरी कसक भी पाठक के मन में छोड़ जाता है। उपन्यास के भाषा की रवानगी भी इसकी पठनीयता को बनाए रखने में बड़ी भूमिका निभाती है। *

पुस्तकः काला, धौला और रंगीन (उपन्यास), **लेखकः** हबीब कैफी, **मूल्यः** 299 रुपए, **प्रकाशकः** कौटिल्य बुक्स, दिल्ली

{ लघुकथा / शीला श्रीवास्तव }

एहसास

सड़क पर दूर से ही पुलिस वालों की चेकिंग होती देख कमलेश ने अपनी मोटरसाइकिल वापस घुमा ली। 'क्या हुआ, गाड़ी क्यों वापस घुमा रहे हो?' पीछे बैठे दोस्त ने पूछा। 'आगे चेकिंग चल रही है। इन पुलिस वालों को कोई काम धंधा है नहीं। जब देखो चौराहे पर खड़े होकर चेकिंग करना शुरू कर देते हैं। हेलमेट क्यों नहीं पहना? लाइसेंस कहां है? बिना नंबर की गाड़ी कैसे चला रहे हो? ढेरों सवाल पूछने लगते हैं। उनको तो बस लोगों को तंग करना होता है और कुछ नहीं।' कमलेश झुंझलाते हुए बोला। 'ऐसा क्यों बोल रहे हो? वो तो बेचारे अपनी ड्यूटी करते हैं।' दोस्त ने कमलेश को समझाने की कोशिश की। 'अरे, काहे की ड्यूटी! इनको तो बस अपनी जेब भरनी होती है और कुछ नहीं।' कमलेश खीझ भरे स्वर में बोला।

इस घटना के कुछ दिनों बाद कमलेश के बेटे का एक्सीडेंट हो गया। बिना नंबर वाली गाड़ी चला रहे किसी टेंपो ड्राइवर ने पीछे से उनके बेटे की बाइक पर जोरदार टक्कर मार दी थी। हेलमेट न पहनने की वजह से उनके बेटे के सिर पर गंभीर चोट लग गई थी। 'ये पुलिस वाले आखिर करते क्या हैं? बिना लाइसेंस, नंबर वाले अवैध वाहनों के खिलाफ, चेकिंग करके उन पर नियंत्रण क्यों नहीं करते?' कमलेश की पत्नी बिलखते हुए अपने पति से पूछ रही थी। आज कमलेश को अपनी उस दिन की गलती का एहसास हुआ। अब उसे पुलिस वालों की चेकिंग का महत्व समझ में आ गया था। *

केरल के सबसे प्रसिद्ध धार्मिक-सांस्कृतिक उत्सवों में से एक है एथडुआ पेरुनल उत्सव। केरल के लोकजीवन से जुड़े इस पर्व के प्रति कुछ अन्य राज्यों एवं विदेशी पर्यटकों के बीच भी काफी लगाव है। इस उत्सव से जुड़ी कुछ अनोखी-रोचक बातें आप जरूर जानना चाहेंगे।

सांस्कृतिक उत्सव

धीरज बसाक

धर्म-संस्कृति-सामाजिक समरसता का संदेश देता एडथुआ पेरुनल उत्सव

केरल की सांस्कृतिक पहचान सिर्फ इसके मंदिरों और पारंपरिक उत्सवों तक सीमित नहीं है। यहां के ईसाई समुदाय के पर्व भी उतने ही भव्य और जीवंत हैं तथा लोकजीवन से जुड़े हुए हैं। इन्हीं में से एक एडथुआ पेरुनल उत्सव है, जो मुख्यतः सेंट जॉर्ज को समर्पित है। इसे केवल केरल के महत्वपूर्ण ईसाई धार्मिक आयोजनों में ही नहीं गिना जाता बल्कि यह दूसरे दक्षिणी राज्यों के ईसाई समुदायों के साथ-साथ दुनिया भर के सांस्कृतिक पर्यटकों के लिए भी महत्वपूर्ण आयोजन है। एडथुआ पेरुनल उत्सव हर साल अप्रैल के अंत से मई की शुरुआत तक लगभग 10 दिनों तक मनाया जाता है। इस साल यह 27 अप्रैल से 7 मई 2026 तक मनाया जाएगा।

हर दिन अलग-अलग आयोजन: इस उत्सव के दौरान चर्च परिसर और उसके आस-पास के पूरे क्षेत्र में एक विशाल मेले का आयोजन होता है। हजारों श्रद्धालु आस्था और श्रद्धा से इस उत्सव में भाग लेते हैं। बड़े पैमाने पर सांस्कृतिक पर्यटक भी इसका हिस्सा बनने के लिए देश-विदेश से आते हैं। उत्सव की शुरुआत विशेष प्रार्थनाओं और ध्वजारोहण से होती है। इसके बाद हर दिन अलग-अलग धार्मिक अनुष्ठान, जुलूस और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। अंतिम दिन का जुलूस या प्रोसेशन सबसे भव्य होता है, जिसमें सेंट जॉर्ज की प्रतिमा को सुसज्जित रथ पर निकालकर पूरे गांव में घुमाया जाता है। इस उत्सव के दौरान एक तरफ प्राचीन अनुष्ठान होते हैं, वहीं दूसरी ओर आधुनिक व्यवस्थाएं भी आयोजन का हिस्सा होती हैं।

आस्था एवं सामूहिक विश्वास का संगम: एडथुआ पेरुनल का धार्मिक महत्व भी खूब है, क्योंकि सेंट जॉर्ज के प्रति लोगों में बहुत श्रद्धा है। श्रद्धालुओं के मुताबिक इस उत्सव में भाग लेने से उनकी मनोकामनाएं पूरी होती हैं। विशेषकर बीमारियों और मानसिक कष्टों से मुक्ति मिलती है। इस उत्सव में हिस्सा लेने आए लोग अपनी तरह-तरह की मन्नतें मांगते हैं और उनके पूरे होने पर सेंट जॉर्ज को धन्यवाद देने के लिए बार-बार इस उत्सव में शामिल होने का संकल्प लेते हैं। इसलिए यह पारंपरिक आयोजन व्यक्तिगत आस्था और सामूहिक विश्वास का भी संगम बन जाता है।

केरल की सांस्कृतिक विशिष्टता का दर्शन: एथडुआ पेरुनल, धार्मिक के साथ-साथ एक सांस्कृतिक उत्सव भी है, इसलिए यह केरल की सार्वभौमिक सह-अस्तित्व की भावना को दर्शाता है। इसमें दूसरे कई उत्सवों की तरह सजे-धजे हाथियों के साथ जुलूस निकाला जाता है, जो केरल के विशिष्ट उत्सवों की सबसे खास पहचान है। लोग पारंपरिक संगीत और लोकनृत्य का लुत्फ उठाते हैं। स्थानीय बैंड, चर्च संगीत और लोकनृत्य इस उत्सव को विशिष्टता प्रदान करते हैं। इस उत्सव के दौरान रात के समय भव्य आतिशबाजी के नजारे भी देखने को मिलते हैं, जो दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देते हैं।

आर्थिक दृष्टि से भी है महत्वपूर्ण: इस उत्सव का स्थानीय अर्थव्यवस्था के साथ भी एक बेहद गहरा और सकारात्मक रिश्ता है। उत्सव के दौरान अलग-अलग राज्यों एवं विदेशों से आए पर्यटक यहां की अर्थव्यवस्था में अपना योगदान देते हैं। अलग-अलग आजीविकाओं से जुड़े लोगों को उत्सव के दौरान रोजगार प्राप्त होता है या विशेष आय प्राप्त होती है।

विविधता में एकता का संदेश: एडथुआ पेरुनल उत्सव की एक अनोखी विशेषता इसकी सामाजिक समरसता है। यह उत्सव धार्मिक सीमाओं से परे जाकर लोगों को आपस में जोड़ता है, विभिन्न धर्मों और समुदायों के लोग मिलकर उत्सव मनाते हैं। ऐसे में यह एकता में विविधता का जीवंत उदाहरण बन जाता है। यह उत्सव इस बात को भी दर्शाता है कि बहुरंगी भारतीय संस्कृति में गहरा साझा भाव भी है। केरल जैसे राज्य में जहां साक्षरता और सामाजिक जागरुकता उच्च स्तर पर है, ऐसे आयोजन समाज को अधिक मजबूत बनाते हैं। आज के समय में जब समाज में विभाजन और तनाव की खबरें अकसर आती रहती हैं, एडथुआ पेरुनल जैसे उत्सव हमें सकारात्मक संदेश देते हैं। यह उत्सव सिखाता है कि धर्म और संस्कृति लोगों को जोड़ने का माध्यम हो सकते हैं, न कि उन्हें एक-दूसरे से अलग करने का।

कुल मिलाकर एडथुआ पेरुनल उत्सव सिर्फ धार्मिक भाव का पर्व नहीं है, यह आस्था, संस्कृति और सामाजिक एकता का जीवंत प्रतीक है। यह उत्सव केरल की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाता है, जिसमें विभिन्न धर्मों और परंपराओं का सुंदर संगम देखने को मिलता है। एडथुआ पेरुनल उत्सव श्रद्धालुओं के लिए आस्था का केंद्र है, वहीं यह भारतीय संस्कृति की उस व्यापक सोच का भी प्रतिनिधित्व करता है, जो विविधता में एकता को सबसे बड़ा मूल्य मानती है। *

एडथुआ पेरुनल उत्सव की प्रमुख विशेषताएं

- यह अलप्पुझा (केरल) के एडथुआ गांव में मनाया जाता है और इसका मुख्य स्थल सेंट जॉर्ज फॉरेन चर्च है।
- यह हर साल 10 दिनों तक अप्रैल के अंत और मई की शुरुआत में मनाया जाता है।
- सेंट जॉर्ज को समर्पित इस सांस्कृतिक उत्सव की सबसे खास विशेषता है, इसका भव्य धार्मिक जुलूस। इस जुलूस में सजे-धजे हाथियों की परेड देखने को मिलती है, साथ ही इस दौरान पारंपरिक संगीत और नृत्य की छटा बिखरती है तथा आतिशबाजी का भी खूब रंग-बिरंगा उत्सव देखने को मिलता है।
- इसमें विभिन्न धर्मों की भागीदारी होती है, इसमें हिस्सा लेने वाले लोगों का एक बड़ा तबका ऐसे आस्थावान लोगों का होता है, जो अपनी असाध्य बीमारियों से मुक्ति पाने की इच्छा से यहां आते हैं और बीमारियों से मुक्ति पाने के लिए मन्नतें मांगते हैं।

मेरे लिए सबसे बड़ा सम्मान मेरे मरीजों की मुस्कान है

प्रेरक व्यक्तित्व

डॉ. पुरुषोत्तम लाल

पंजाब के मोगा जिले के एक छोटे से गांव से ताल्लुक रखने वाले डॉक्टर पुरुषोत्तम लाल का शुरुआती जीवन बहुत संघर्षपूर्ण रहा। लेकिन अपने अथक परिश्रम और समाज के लिए कुछ करने के संकल्प के चलते मेडिकल क्षेत्र में उन्होंने अद्वितीय मुकाम हासिल किया। डॉक्टर पुरुषोत्तम भारत में इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजी के फादर कहे जाते हैं। वह देश के दूसरे सबसे बड़े नागरिक सम्मान पद्म विभूषण से विभूषित हैं। डॉ. पुरुषोत्तम लाल के प्रेरक जीवन का सफर उन्हीं की जुबानी।

आसान नहीं था आरंभिक जीवन: मेरा बचपन बहुत संघर्षपूर्ण था। हमारा पूरा ध्यान बस इस बात पर होता था कि घर कैसे चले और पढ़ाई कैसे पूरी हो? हम सभी भाई एक ही लैंप की हल्की रोशनी में पढ़ते थे, जिसकी चिमनी भी टूटी हुई होती थी। लेकिन मेरे अंदर कहीं एक आग जरूर थी, कुछ अलग करने की चाह। मन में यही ख्याल आता था कि जिंदगी में कुछ ऐसा करना है, जिससे अपने परिवार का जीवन बदल सकूं और समाज के लिए भी कुछ कर सकूं। उन्हीं कठिन परिस्थितियों में पले छोटे-छोटे सपने ही मेरी सबसे बड़ी ताकत बने और मुझे इस मुकाम तक लेकर आए।

परिश्रम से पाया मनचाहा मुकाम: मेरा पूरा सफर संघर्ष और मेहनत से भरा रहा है। अपनी लगन और समर्पण के दम पर मैंने नेशनल मेरिट स्कॉलरशिप हासिल की, जो मेरे लिए एक नई उम्मीद लेकर आई। इसी के सहारे मैं अमृतसर मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस की पढ़ाई के लिए पहुंचा। वहां भी दिन-रात मेहनत करता रहा और हर चुनौती को एक अवसर की तरह लिया। वर्ष 1975 में अपनी क्लास में टॉप किया। डॉक्टर बनने के बाद मैंने इसे केवल एक पेशा नहीं, बल्कि सेवा का माध्यम माना। इसके बाद आगे की पढ़ाई के लिए अमेरिका गया, जहां कार्डियोलॉजी में उच्च प्रशिक्षण लिया। वहां के प्रतिष्ठित संस्थानों में काम करते हुए मैंने बहुत कुछ सीखा, खुद को निखारा।

जन सेवा के लिए देश लौट आया: अमेरिका में मुझे बहुत कुछ मिला, बेहतर सुविधाएं, सम्मान और सीखने के अनगिनत अवसर। लेकिन दिल के किसी कोने में हमेशा एक खालीपन था। जब मैं भारत आता और यहां के मरीजों की हालत देखता, खासकर वे लोग जो पैसों की कमी के कारण इलाज नहीं करा पाते, तो मन बहुत व्यथित हो जाता था। मुझे लगता था कि मेरी असली जरूरत यहां है, अपने देश में है। इसलिए एक दिन मैंने तय किया कि अब वापस अपने देश लौटना है।

मेट्रो हॉस्पिटल्स की शुरुआत: मेरी सोच हमेशा से बहुत मानवीय रही है। तभी मैंने ठान लिया कि एक ऐसा अस्पताल बनाऊंगा, जहां इलाज की गुणवत्ता विश्वस्तरीय हो, लेकिन वह आम आदमी की पहुंच से बाहर न हो। मेट्रो हॉस्पिटल्स की शुरुआत इसी सोच और भावना के साथ हुई, सेवा, संवेदना और सुलभ इलाज के उद्देश्य से।

इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजी में योगदान: मैंने हमेशा कोशिश की कि मरीज को कम से कम तकलीफ हो और इलाज ज्यादा सुरक्षित और प्रभावी हो। अगर बिना बड़ी सर्जरी के किसी की जान बचाई जा सके, तो इससे बड़ी खुशी क्या हो सकती है। जब मैं देखता हूं कि जिन तकनीकों को हमने अपनाया और आगे बढ़ाया, वे आज हजारों लोगों की जिंदगी आसान बना रही हैं, तो दिल को सुकून मिलता है।

मेरे लिए सबसे बड़ा सम्मान: पद्म भूषण, पद्म विभूषण जैसे सम्मान मिलना निश्चित रूप से गर्व की बात है। लेकिन अगर दिल से कहूं, तो मेरे लिए सबसे बड़ा सम्मान मेरे मरीजों की मुस्कान है। जब कोई मरीज स्वस्थ होकर अपने परिवार के पास लौटता है और आंखों में खुशी के आंसू लेकर धन्यवाद देता है, तो वह किसी भी पुरस्कार से कहीं ज्यादा अनमोल होता है।

युवा डॉक्टरों को संदेश: मैं युवाओं से यही कहना चाहूंगा कि डॉक्टर बनना सिर्फ एक करियर नहीं, बल्कि एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। मरीज आपके पास उम्मीद और विश्वास लेकर आता है। इसलिए हमेशा सीखते रहें, खुद को अपडेट रखें और ईमानदारी से काम करें। सबसे जरूरी बात, अपने अंदर इंसानियत और संवेदनशीलता को जिंदा रखें। तकनीक और ज्ञान आपको एक अच्छा डॉक्टर बना सकते हैं, लेकिन आपकी संवेदना ही आपको महान डॉक्टर बनाती है।

सफलता के मायने: मेरे लिए सफलता का मतलब सिर्फ नाम, प्रसिद्धि या पुरस्कार नहीं है। असली सफलता तब होती है, जब आप किसी की जिंदगी में सकारात्मक बदलाव ला सकें। यही सच्ची सफलता है, जो दिल को संतोष देती है। *

प्रस्तुति: हरिभूमि फीचर्स

दुनिया भर में प्रचलित अलग-अलग नृत्य कलाओं के महत्व को रेखांकित करने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष 29 अप्रैल को अंतरराष्ट्रीय नृत्य दिवस मनाया जाता है। इस अवसर पर भारत की सांस्कृतिक विविधता को प्रदर्शित करते विभिन्न प्रदेशों के प्रमुख लोकनृत्यों के बारे में जानिए।

सांस्कृतिक विविधता के प्रतीक विभिन्न प्रदेशों के लोकनृत्य

महाराष्ट्र का लोकनृत्य-लावणी

असम का लोकनृत्य-बिहू

हिमाचल प्रदेश का लोकनृत्य-नाटी

परंपरा

शिखर चंद जैन

भारत विविधताओं का देश है। यहां की यह विविधता सिर्फ भाषा, खान-पान या रहन-सहन तक सीमित नहीं है, बल्कि यहां के लोक नृत्यों में भी रची-बसी है। लोक नृत्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि आम जनमानस के उल्लास, उनकी धार्मिक आस्था और ऋतुओं के चक्र का जीवंत उत्सव भी होते हैं।

बिहू (असम): असमिया नववर्ष (रंगाली बिहू) के अवसर पर किया जाने वाला यह नृत्य अपनी तेज गति और हाथों के संचालन के लिए प्रसिद्ध है। यह नृत्य हाथों के फुर्तीले संचालन और पारंपरिक 'मेखला चादर' वेशभूषा के लिए भी जाना जाता है। यह नृत्य नई फसल तैयार होने की खुशी और प्रकृति के प्रति आभार ज्ञापन करने का प्रतीक भी होता है।

नाटी (हिमाचल प्रदेश): हिमाचल का सबसे लोकप्रिय लोक नृत्य 'नाटी' कुल्लू और शिमला क्षेत्रों में बड़े उत्सवों के दौरान सामूहिक रूप से किया जाता है। सैकड़ों लोग एक-दूसरे का हाथ पकड़कर लंबी श्रंखला बनाते हैं और स्थानीय वाद्ययंत्रों की धुन पर कदम से कदम मिलाकर झूमते हैं। इसने 'सबसे बड़े लोक नृत्य' के रूप में गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी अपना नाम दर्ज कराया है।

भांगड़ा (पंजाब): पंजाब की मिट्टी की खुशबू और किसानों के उल्लास का प्रतीक है भांगड़ा लोकनृत्य। मुख्य रूप से बैसाखी के पर्व और फसल कटाई के समय किया जाने वाला यह नृत्य अपनी ऊर्जा के लिए पूरी दुनिया में मशहूर है। ढोल की थाप पर रंगीन पगड़ी और लुंगी पहने गबरू जब 'बल्ले-बल्ले' कहते हुए थिरकते हैं, तो दर्शकों के पैर भी अपने आप थिरकने लगते हैं।

पंजाब का लोकनृत्य-भांगड़ा

रासलीला (उत्तर प्रदेश): ब्रज क्षेत्र का यह प्रसिद्ध नृत्य भगवान कृष्ण और राधा के प्रेम और उनकी लीलाओं पर आधारित है। ब्रज की धरती मथुरा-वृंदावन से उपजी 'रासलीला' भगवान श्री कृष्ण और गोपियों के दिव्य प्रेम की कहानी है। इसमें नर्तक अपनी भाव-भंगिमाओं से कृष्ण की बाल लीलाओं और रास को प्रदर्शित करते हैं, जो दर्शकों को सीधे भक्ति की दुनिया में ले जाता है।

घूमर (राजस्थान): राजपूताना आन-बान और शान का प्रतीक 'घूमर' को 'राजस्थान की आत्मा' कहा जाता है। अपनी शालीनता और भव्यता के लिए जाना जाने वाला यह नृत्य, भील जनजाति से आरंभ हुआ और बाद में राजपूताना घरानों की पहचान बना। इसमें महिलाएं बड़े घेरे वाले घाघरा पहनकर गोल-गोल घूमती हैं, जिससे एक सुंदर घेरा बनता है। इसकी धीमी लय और हाथ के सधे हुए संचालन इसे बेहद आकर्षक बनाते हैं।

लावणी (महाराष्ट्र): महाराष्ट्र की कला परंपरा का गौरव 'लावणी' पारंपरिक नृत्य है, जो अपनी लयबद्ध ताल और ढोलकी की थाप के साथ किया जाता है। इसमें महिलाएं नौवारी साड़ी पहनती हैं। नौवारी 9 गज की साड़ी होती है। इस नृत्य के दौरान गाए जाने वाले गीत अकसर समाज, राजनीति और प्रेम पर आधारित होते हैं।

कर्नाटक का लोकनृत्य-यक्षगान

यक्षगान (कर्नाटक): दक्षिण भारत का 'यक्षगान' एक प्राचीन और जटिल नृत्य कला है। यह केवल नृत्य नहीं, बल्कि एक संपूर्ण नाटक है, जिसमें भारी वेशभूषा, चेहरे पर चटकीला श्रंगार और संवादों का प्रयोग होता है। इसकी कहानियां मुख्य रूप से हिंदू महाकाव्यों पर आधारित होती हैं, जो रात भर खुले मैदानों में प्रदर्शित की जाती हैं। *

यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल भारतीय नृत्य

भारत की कुछ लोकप्रिय नृत्य शैलियों को यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत में शामिल किया गया है। ये हैं-

गरबा (गुजरात): नवरात्रि के नौ दिनों में देवी दुर्गा की प्रतिमा या 'दीप गर्भ' के चारों ओर गोल घेरा बनाकर किया जाने वाला यह नृत्य शक्ति की उपासना का एक माध्यम एवं एकता का प्रतीक है। 'गरबा' के दौरान रंग-बिरंगी चनिया-चोली और कुर्तों में सजे लोग तालियों की लय पर जिस तरह समन्वय बिठाते हैं, वह अद्भुत होता है।

छऊ (झारखंड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल): यह एक अर्ध-शास्त्रीय मुखौटा नृत्य है, जिसमें मार्शल आर्ट, कलाबाजियां और लोक परंपराओं का मिश्रण होता है। इसमें रामायण और महाभारत जैसी पौराणिक कथाओं को नृत्य के माध्यम से जीवंत किया जाता है।

कालबेलिया (राजस्थान): राजस्थान के कालबेलिया समुदाय द्वारा किया जाने वाला यह नृत्य अपनी लचीली मुद्राओं के लिए जाना जाता है। काली रंग की कढ़ाई वाली पोशाक पहने महिलाएं बीन और ढफ की धुन पर नागिन की तरह लहराते हुए नृत्य करती हैं। इसकी गति इतनी तेज होती है कि देखने वाले अपनी पलकें झपकाना भूल जाते हैं।

बड़ा पर्दा

हेमंत पाल

दर्शकों को बांधे रखने में सफल रहीं बिना इंटरवल वाली ये फिल्में

वैसे तो दो-ढाई घंटे की फिल्म के बीच में कुछ मिनटों का ब्रेक यानी इंटरवल जरूर होता है। लेकिन बॉलीवुड में कुछ ऐसी फिल्में भी बनी हैं, जिनमें कोई इंटरवल ही नहीं था। बिना ब्रेक वाली ऐसी ही कुछ अलग तरह की फिल्मों पर एक नजर।

हर दौर में कुछ फिल्मकार ऐसे हुए हैं, जो फिल्मों के तयशुदा फॉर्मूले को चुनौती देते हुए नए प्रयोग करते हैं। बिना गाने वाली फिल्में, सीमित किरदारों पर आधारित फिल्म या एक ही रात में घटित होने वाली घटना पर आधारित फिल्म। ऐसे प्रयोग सिनेमा को नई दिशा देते हैं। इन्हीं में से एक खास प्रयोग रहा बिना इंटरवल की फिल्म, जिसमें दर्शकों को बिना रुके पूरी कहानी के साथ बांधकर रखा जाता है। हालांकि फिल्म में इंटरवल इसलिए रखा जाता है कि दर्शक बीच में थोड़ा रिलैक्स हो जाएं और उसकी कहानी को नए सिरे से एंज्वॉय करें। इंटरवल के बहाने फिल्म की कहानी में मोड़ लाने का मौका भी मिलता है। ऐसे में बिना ब्रेक की फिल्म दर्शकों को नए तरीके का अनुभव देती है।

इसलिए किए गए प्रयोग: भारतीय सिनेमा में इंटरवल सिर्फ दर्शकों को रिलैक्स करने का साधन नहीं, बल्कि एक व्यावसायिक व्यवस्था का भी हिस्सा रहा है। लेकिन कुछ निर्देशकों ने महसूस किया कि खासतौर पर सस्पेंस, थ्रिलर और यथार्थवादी फिल्मों में इंटरवल कहानी की गति को तोड़ देता है। ऐसे में अगर फिल्म की लंबाई सीमित रखी जाए और पटकथा कसावट भरी हो, तो बिना ब्रेक दर्शकों को अधिक प्रभावशाली अनुभव दिया जा सकता है। यही कारण है कि हिंदी फिल्म इतिहास में कुछ चुनिंदा फिल्में ऐसी बनीं, जिनमें इंटरवल नहीं रखा गया। वे फिल्में अपनी अलग पहचान बनाने में सफल रहीं।

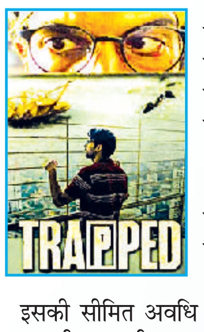

मर्डर मिस्ट्री 'इत्तेफाक': बिना इंटरवल के फिल्म बनाने की दिशा में सबसे चर्चित और शुरुआती प्रयोग 'इत्तेफाक' (1969) के रूप में सामने आया, जिसे यश चोपड़ा ने निर्देशित किया था। यह फिल्म अपने समय से काफी आगे की सोच का परिणाम थी। इस फिल्म में न तो कोई गीत था और न ही इंटरवल। कहानी एक मर्डर मिस्ट्री पर आधारित थी, जो अंग्रेजी नाटक 'साइनपोस्ट टू मर्डर' से प्रेरित थी। राजेश खन्ना ने इसमें एक ऐसे व्यक्ति की भूमिका निभाई, जिस पर अपनी पत्नी की हत्या का आरोप होता है और वह पुलिस से बचने के लिए एक घर में शरण लेता है। उस घर की मालकिन, जिसकी भूमिका नंदा ने निभाई, खुद एक रहस्य छुपाए हुए होती है। फिल्म की कहानी इतनी तेज और रोचक ढंग से आगे बढ़ती है कि दर्शकों को इंटरवल की जरूरत महसूस ही नहीं होती। लगभग डेढ़ घंटे की इस फिल्म को कम समय में शूट किया था, लेकिन इसकी कहानी की कसावट और रोमांच ने इसे यादगार बना दिया।

सामाजिक यथार्थ को दर्शाती 'धोबी घाट': फिल्म 'धोबी घाट' का निर्देशन किरण राव ने किया था। इस फिल्म में आमिर खान मुख्य भूमिका में नजर आए, लेकिन यह पूरी तरह से स्टार-ड्रिवन फिल्म नहीं थी। यह मुंबई शहर के अलग-अलग सामाजिक और भावनात्मक स्तरों पर जी रहे चार लोगों की कहानी है। मोनिका डोगरा, प्रतीक बब्बर और कृति मल्होत्रा द्वारा निभाए गए किरदारों के जरिए फिल्म यह दिखाती है कि सपनों के शहर में हर व्यक्ति अपने-अपने संघर्षों और अधूरी इच्छाओं के साथ जी रहा है। फिल्म का स्वर बहुत ही यथार्थवादी और संवेदनशील है। इसकी सीमित अवधि और बिना इंटरवल के प्रस्तुतीकरण की वजह से दर्शक लगातार पात्रों की दुनिया में डूबे रहते हैं।

क्लॉस्ट्रोफोबिक अनुभव देती 'ट्रैप्ड': विक्रमादित्य मोटवानी द्वारा निर्देशित 'ट्रैप्ड' में राजकुमार राव ने एक ऐसे युवक की भूमिका निभाई है, जो मुंबई के एक सुनसान अपार्टमेंट में फंस जाता है। उसके पास न खाना है, न पानी, न बिजली और न बाहर निकलने का कोई आसान रास्ता। पूरी फिल्म उसी के संघर्ष, भय और जीवित रहने की कोशिशों के इर्द-गिर्द घूमती है। बिना इंटरवल के यह कहानी दर्शकों को उसकी स्थिति में बांध देती है और एक तरह का क्लॉस्ट्रोफोबिक अनुभव देती है। 'ट्रैप्ड' में राजकुमार राव के अभिनय और फिल्म के प्रयोगात्मक स्वरूप की काफी सराहना हुई।

ये फिल्में भी नहीं करतीं ब्रेक की डिमांड: बॉलीवुड में कुछ और फिल्में भी हैं, जिनमें इंटरवल का प्रभाव लगभग समाप्त कर दिया गया या जिन्हें बिना ब्रेक के देखने पर ही इसका असर अधिक महसूस होता है। 'ए वेडनेसडे' जैसी फिल्म अपनी तेज रफ्तार और सीमित समय अवधि के कारण बिना इंटरवल के अधिक प्रभावी लगती है। इसी तरह 'कौन' जिसे राम गोपाल वर्मा ने बनाया, भी सीमित किरदारों और एक ही लोकेशन में घटित होने वाली कहानी के कारण बिना ब्रेक ज्यादा असरदार अनुभव देती है।

आज कितना प्रासंगिक है फिल्मों में इंटरवल: आज जब ओटीटी प्लेटफॉर्म का दौर है और दर्शक बिना किसी व्यवधान के फिल्में देखते हैं, तब इंटरवल की अवधारणा पहले जितनी अनिवार्य नहीं रह गई। अब कहानी की मांग के अनुसार ही फिल्म की संरचना तय की जाती है। फिर भी सिनेमाघरों में इंटरवल का चलन पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ। क्योंकि यह फिल्म प्रदर्शन की परंपरा और व्यवसाय से भी जुड़ा हुआ है। बिना इंटरवल की फिल्में यह साबित करती हैं कि अगर कहानी में दम हो और प्रस्तुति में कसावट हो, तो दर्शकों को बिना किसी ब्रेक के भी पूरी तरह बांधकर रखा जा सकता है। यह प्रयोग भले कम किया गया हो, लेकिन जब भी किया गया, उसने सिनेमा को एक नई दृष्टि दी और यह दिखाया कि कहानी कहने के तरीके हमेशा बदल सकते हैं। *